Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

बِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّي عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

अल्लाह तआला का आदेश

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ط
فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ص

(सूरः बकरः आयत : 199)

अनुवाद : अगर तुम अपने रब से फ़ायदा मांगो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, इसलिए जब तुम अरफ़ात से वापस आओ तो मस्जिदे हराम में अल्लाह को याद करो।

वर्ष- 10
अंक - 30
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 मोहर्रम, 1446-47 हिज्री कमरी, 24 वफ़ा 1404 हिज्री शम्सी, 24 जुलाई 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

झूठ से बचने की सीख यह बड़े गुनाहों में से है

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बड़े गुनाहों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: अल्लाह का शरीक ठहराना और माता-पिता की नाफ़रमानी और किसी जान का नाहक़ क़त्ल करना और झूठी गवाही देना।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकरा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें बड़े गुनाह न बताऊँ? सहाबा ने कहा: क्यों नहीं, या रसूलुल्लाह! फरमाइए! आपने फ़रमाया: अल्लाह का शरीक ठहराना और माता-पिता की नाफ़रमानी। और आप टेक लगाए हुए थे, उठकर बैठ गए और फ़रमाया: होशियार रहो, झूठ बोलना भी (बड़ा गुनाह है)। कहते थे: आप इसे इतनी बार दोहराते रहे कि हमने कहा: काश! आप खामोश हो जाएँ।

★ ★ ★

यदि किसी दुआ में अपनी मंशा और मुराद के मुताबिक़ कामयाब न हो तो ख़ुदा पर बद-ज़न्न न हो, बल्कि अपनी इस नाकामयाबी को किसी ग़लती का नतीजा समझकर अल्लाह तआला की रज़ा पर दिल खोलकर राज़ी हो जाए और समझ ले कि मेरा मौला यही चाहता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

दुआ की क़ुबूलियत का फ़लसफ़ा

दुआ बड़ी चीज़ है! अफ़सोस कि लोग नहीं समझते कि वह क्या है। कुछ लोग यह समझते हैं कि हर दुआ जिस तरह और हालत में मांगी जाए, ज़रूर क़ुबूल हो जानी चाहिए। इसलिए जब वे कोई दुआ मांगते हैं और फिर वह अपने दिल में बसाई हुई सूरत के मुताबिक़ उसे पूरा होते नहीं देखते, तो मायूस और नाउम्मीद होकर अल्लाह तआला पर बद-ज़न्न हो जाते हैं। हालांकि मोमिन की यह शान होनी चाहिए कि अगर ज़ाहिर में उसे अपनी दुआ में मुराद हासिल न हो, तब भी नाउम्मीद न हो, क्योंकि रहमत-ए-इलाही ने इस दुआ को उसके हक़ में मुफ़ीद नहीं समझा। देखो, बच्चा अगर एक आग के अंगारे को पकड़ना चाहे तो मां दौड़कर उसे रोकेगी, बल्कि अगर बच्चे की इस नादानी पर एक थप्पड़ भी लगा दे तो कोई तअज्जुब नहीं। इसी तरह मुझे तो एक लज़्ज़त और सुरूर आ जाता है जब मैं इस फ़लसफ़े-ए-दुआ पर ग़ौर करता हूं और देखता हूं कि वह अलीम व ख़बीर ख़ुदा जानता है कि कौन-सी दुआ मुफ़ीद है।

आदाब-ए-दुआ

मुझे बार-हा अफ़सोस आता है, जब लोग दुआ के लिए ख़त भेजते हैं और साथ ही लिख देते हैं कि अगर हमारे लिए यह दुआ क़ुबूल न हुई तो हम झूठ समझ लेंगे। आह! यह लोग आदाब-ए-दुआ से कैसे बेख़बर हैं। नहीं जानते कि दुआ करने वाले और कराने वाले के लिए कैसी शर्तें हैं। इससे पहले कि दुआ की जाए यह बद-ज़न्नी का शिकार हो जाते हैं और अपने मानने का एहसान जताना चाहते हैं और न मानने और तकज़ीब की धमकी देते हैं। ऐसा ख़त पढ़कर मुझे बदबू आ जाती है और मुझे ख़्याल आता है कि इससे बेहतर था कि यह दुआ के लिए ख़त ही न लिखता।

मैंने कई बार इस मसले को बयान किया है और फिर मुख़्तसर तौर पर समझाता हूं कि अल्लाह तआला अपने बंदों से दोस्ताना मुआमला करना चाहता है। दोस्तों में एक सिलसिला तबादले का रहता है। इसी तरह अल्लाह तआला और उसके बंदे में भी इसी रंग का एक सिलसिला होता है।

अल्लाह तआला के नज़दीक मुबादला यह है कि जैसे वह अपने बंदे की हज़ारों दुआओं को सुनता और मानता है, उसके अय्यूब पर पर्दापोशी करता है, बावजूद कि वह एक ज़लील से ज़लील हस्ती है, लेकिन उस पर फ़ज़्ल व रहम करता है। इसी तरह उसका हक़ है कि यह ख़ुदा की भी मान ले, अर्थात अगर किसी दुआ में अपनी मंशा और मुराद के मुताबिक़ नाकाम रहे तो ख़ुदा पर बद-ज़न्न न हो, बल्कि अपनी इस नाकामयाबी को किसी ग़लती का नतीजा समझकर अल्लाह तआला की रज़ा पर दिल खोलकर राज़ी हो जाए और समझ ले कि मेरा मौला यही चाहता है।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 77 ता 78, एडिशन 2018, क़ादियान) ★ ★ ★

रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अमानत और दयानत के उसूल पर सख़्ती से अमल करते थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह सबक सीखा और उन्होंने भी इस पर ऐसी सख़्ती से अमल किया जिसकी नज़ीर आज तहज़ीब व शाइस्तगी की दावेदार क़ौमों में भी कहीं नज़र नहीं आ सकती।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरतुल मोमिनून आयत 9
"وَالَّذِينَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ"
की तफ्सीर में फ़रमाते हैं:

पांचवां दर्जा रूहानी तरक़्क़ी का यह बताया कि मोमिन अपनी अमानतों और अपने अहदों का ख़याल रखते हैं। अर्थात जो अमानत उसके पास रखवाई जाए उसकी हिफाज़त करते हैं और जो अहद करते हैं, ख़्वाह वह किसी काफिर या दुश्मन से ही क्यों न हो, उसे पूरा करते हैं। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अमानत और दीयानत के उसूल पर इतनी सख़्ती से अमल करते थे कि तारीख़ों में लिखा है जिन दिनों इस्लामी फौजों ने ख़ैबर का मुहासिरा किया हुआ था, एक यहूदी रईस का गलहबान जो उसकी बकरियां चराया करता था मुसलमान हो गया। और उसने कहा: या रसूलुल्लाह! मैं अब उन लोगों में तो नहीं जा सकता, लेकिन मेरे पास अपने यहूदी आक़ा की जो बकरियां हैं, उनके मुताल्लिक हुज़ूर का क्या इरशाद है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बकरियों का मुंह यहूदी क़िले की तरफ कर दो और उन्हें इधर धकेल दो। अल्लाह तआला ख़ुद उन्हें उनके मालिक के पास पहुंचा देगा। चुनांचे उसने ऐसा ही किया और बकरियां क़िले के पास चली गईं जहां से क़िले वालों ने उन्हें अंदर दाख़िल कर लिया। (सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 45)

इस वाक़िए पर ग़ौर करने से मालूम हो सकता है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

सारी तदबीरें अपनाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने रब के सामने दुआ के लिए हाथ उठाए और अर्ज़ किया:

اَللّٰهُمَّ خُذْ عَلٰى أَسْمَاعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ فَلَا يَرَوْنَا اِلَّا بَغْتَةً، وَلَا يَسْمَعُوْنَ بِنَا اِلَّا فَجْأَةً

"अल्लाहुम्मा ख़ुज़ अला अस्माइहिम व अब्सारिहिम फला यरौन्ना इल्ला बग़तह, वला यस्मउना बिना इल्ला फजअह।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क़ुरैश ने उस अहद को तोड़ दिया है जिसका इरादा अल्लाह तआला ने कर लिया है।" हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा: "या रसूलुल्लाह! क्या इसमें भलाई है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हाँ, इसमें भलाई है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुज़ाह की घटना की खबर मिली तो आप ने फ़रमाया: "उस ज़ात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं उनकी हर उस चीज़ से हिफ़ाज़त करूँगा जिससे मैं अपने घरवालों की हिफ़ाज़त करता हूँ।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़मरा रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरैश के पास भेजा और तीन बातों में से एक को चुनने के लिए कहा: "या तो वह बनू ख़ुज़ाह के मारे गए लोगों की दियत अदा कर दें, या बनू नुफ़ासा से अपना नाता तोड़ लें, या हुदैबिया के समझौते को खत्म कर दें।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू सुफ़ियान के मदीना आने से पहले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमाया: "अबू सुफ़ियान तुम्हारे पास आ रहा है। वह कह रहा है कि समझौते को नया कर दो और सुलह में बढ़ोतरी कर दो, लेकिन वह नाराज़ होकर वापस जाएगा। उसकी कोई बात नहीं मानी जाएगी।"

फ़त्ह-ए-मक्का के मनज़र में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पुरमआरिफ बयान

"अल-कुफ़्रु मिल्लतुन वाहिदा" हो चुका है, कुफ्फार सब एक मिल्लत-ए-वाहिदा बन गए हैं और मुसलमानों को भी उम्मत-ए-वाहिदा बनना पड़ेगा। तभी उनकी बचत है, इसके बिना कोई चारा नहीं।

हालिया ईरान-इस्राइल तनाज़ुअ के पेश-ए-नज़र दुआओं की तहरीक।

ख़ुत्बः ज़ुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 जून 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

कुछ जुमे पहले फ़त्ह-ए-मक्का के संदर्भ में प्रारंभिक चर्चा की थी, आज इस विषय में और अधिक विवरण प्रस्तुत करूँगा।

इस युद्ध के कारण के बारे में बताया गया है कि इस युद्ध का तात्कालिक कारण यह हुआ कि क़ुरैश ने उस संधि को तोड़ दिया जो हुदैबिया में हुई थी और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दूत को अत्यंत अहंकारपूर्ण ढंग से कह दिया कि हम संधि समाप्त करते हैं और हम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से युद्ध करेंगे। जब यह समाचार पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तक पहुँचा तो आपने मक्का की ओर प्रस्थान किया।

उनकी संधि भंग करने का विवरण इस प्रकार है: जब हुदैबिया की संधि हुई थी, तो उसमें एक शर्त यह भी थी कि अरब के जो भी कबीले चाहें, वे पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के साथ संधि कर सकते हैं और जो चाहें वे क़ुरैश के साथ संधि कर सकते हैं। इस प्रकार बनू बक्र और बनू ख़ुज़ाह जो हरम के आसपास बसे हुए थे, उनमें से बनू ख़ुज़ाह ने पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के साथ संधि कर ली जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी कबीले बनू बक्र ने क़ुरैश के साथ संधि कर ली और दोनों कबीले आपसी लड़ाई से सुरक्षित हो गए।

(फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी, जिल्द 7, पृष्ठ 661, आराम बाग़ कराची)(फत्ह-ए-मक्का, बाशमील, पृष्ठ 90, 111, नफीस एकेडमी कराची)(ग़ज़वात व सराया, मुहम्मद अज़हर फरीद, पृष्ठ 445, फरीदिया पब्लिशर्ज़ साहिवाल)

जाहिलियत के काल में बनू ख़ुज़ाह और बनू बक्र के बीच लड़ाई हुई थी जिसमें बनू बक्र ने एक ख़ुज़ाह व्यक्ति को मार डाला था और बनू ख़ुज़ाह ने बनू बक्र के तीन आदमियों को हरम की सीमा में मार डाला था। बनू बक्र और बनू ख़ुज़ाह इसी स्थिति में थे कि उनके बीच लड़ाइयाँ चल रही थीं जब पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का प्रादुर्भाव हुआ। जब आपने अपने पैगंबर होने का दावा किया तो लोग इस्लाम के बारे में व्यस्त हो गए। जब यह नई बात उनके सामने आई तो वे इसके बारे में चर्चा करने लगे और एक-दूसरे से रुक गए, लेकिन वे अपने दिलों में गुस्सा और क्रोध छिपाए हुए थे।

जब शाबान 8 हिजरी का महीना आया और हुदैबिया की संधि को 22 महीने बीत चुके थे, तो बनू बक्र के एक व्यक्ति ने पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के बारे में अपमानजनक कविता लिखी। जब बनू ख़ुज़ाह के एक युवक ने उसे यह कविता गाते सुना तो उसने उस व्यक्ति को पीटा और उसका सिर फोड़ दिया। इस घटना पर दोनों कबीलों में झगड़ा हो गया, जबकि पहले से ही कबायली दुश्मनी चली आ रही थी और अस्थायी रूप से रुकी हुई थी। बनू बक्र के जिस व्यक्ति ने यह अपमानजनक कविता लिखी थी, वह बनू बक्र के गोत्र बनू नुफ़ासा का सदस्य था। जब इस कवि को बनू ख़ुज़ाह के युवक ने घायल कर दिया तो बनू बक्र में से बनू नुफ़ासा ने क़ुरैश से बनू ख़ुज़ाह के खिलाफ लोगों और हथियारों की सहायता की माँग की।

क़ुरैश ने उनकी सहायता करने की हामी भर ली, सिवाय अबू सुफ़ियान के। न तो उससे इस बारे में सलाह ली गई थी और न ही उसे इसकी जानकारी थी। एक मत यह भी है कि उससे सलाह ली गई थी लेकिन उसने इंकार कर दिया था अर्थात युद्ध करने से मना कर दिया था, लेकिन इसके बावजूद क़ुरैश

ने हथियारों, घोड़ों और लोगों के साथ उनकी मदद की। उन सभी ने गुप्त रूप से हमला किया ताकि बनू ख़ुज़ाह अपना बचाव न कर सकें। बनू ख़ुज़ाह संधि के कारण स्वयं को सुरक्षित समझ रहे थे और बेखबर थे। कुरैश, बनू बक्र और बनू नुफ़ासा ने वतीर नामक स्थान पर मिलने का निश्चय किया। यह मक्का

मुकर्रमा का निचला इलाका था जो मक्का के दक्षिण-पश्चिम में हरम की सीमा पर मक्का से सोलह किलोमीटर की दूरी पर स्थित था। बनू ख़ुज़ाह के घर इसी जगह पर थे। ये विरोधी लोग निर्धारित समय पर वहाँ एकत्र हुए। कुरैश के नेताओं ने वेश बदल रखे थे और अपने चेहरे ढंक रखे थे। इनमें सफवान बिन उमय्या, इकरमा बिन अबी जहल, हुवैतब बिन अब्दुल उज़्ज़ा, शैबा बिन उस्मान और मिकरज़ बिन हफ्स शामिल थे। इन सभी के साथ उनके नौकर भी थे। और बनू बक्र का नेता नौफल बिन मुआविया भी साथ था। बनू ख़ुज़ाह बेखबर और निश्चिंत होकर रात को सो रहे थे। उनमें अधिकांश बच्चे, महिलाएँ और कमजोर लोग थे। कुरैश और बनू नुफ़ासा ने उन पर हमला किया और लोगों को मारना शुरू कर दिया, यहाँ तक कि उनमें से कुछ भागकर हरम की सीमा में पहुँच गए और बनू ख़ुज़ाह ने बनू बक्र के नेता नौफल बिन मुआविया से कहा: "हे नौफल! अब हम हरम में प्रवेश कर चुके हैं, तुम्हें तुम्हारे माबूद की कसम है!" तब नौफल ने बड़े अहंकार से कहा: "आज कोई माबूद नहीं है!" और हरम की सीमा में भी उन्होंने हत्या और लूटपाट जारी रखी। बनू बक्र ने उस दिन बनू ख़ुज़ाह के बीस आदमियों को मार डाला। बहरहाल, बाद में कुरैश को अपने इस कृत्य पर शर्मिंदगी भी हुई, वे परेशान हुए। उन्हें पता था कि उनके इस कार्य से वह संधि टूट गई है जो पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके बीच थी। सुहैल बिन अम्र ने नौफल से कहा: "हमने तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के साथ मिलकर जिन लोगों को मारा है, तुम इसे अच्छी तरह जानते हो। तुमने उनका सामूहिक संहार किया है और बाकी लोगों को भी मारना चाहते हो, लेकिन हम इस पर तुम्हारी अनुसरण नहीं करेंगे। उन्हें छोड़ दो।" अंततः नौफल ने उन्हें छोड़ दिया और वे चले गए। हारिस बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीया दोनों मिलकर सफवान बिन उमय्या, सुहैल बिन अम्र और इकरिमा बिन अबी जहल के पास गए और उन्हें बनू ख़ुज़ाह के विरुद्ध बनू बक्र की सहायता करने पर कड़ी फटकार लगाई कि "तुमने यह क्या किया है? तुम्हारी तो संधि थी।" और उन्हें बताया कि "तुमने जो किया है वह हमारे और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के बीच की संधि को तोड़ने वाला है।"

(सबुल्ल्-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 200-201, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत) (मुअज्जम अल-मआलिम अल-जुग्राफिया फी अल-सीरा अल-नबविया, पृष्ठ 331, दार मक्का लिल नशर व अल-तौज़ी, 1982)(अल-तबक़ात अल-कुबरा, जिल्द 2, पृष्ठ 102, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)(अल-सीरा अल-हलबिया, जिल्द 3, पृष्ठ 103, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)(फत्ह़-ए-मक्का, बाशमील, पृष्ठ 98, नफीस एकेडमी, कराची) (ग़ज़वात अल-नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), मुहम्मद अब्दुल अहद, पृष्ठ 430, मतबुआ ज़ाविया पब्लिशर्ज़, लाहौर)(ग़ज़वात व सराया, मुहम्मद अज़हर फरीद, पृष्ठ 446, फरीदिया पब्लिशर्ज़, साहिवाल)

हारिस बिन हिशाम अबू सुफियान के पास आया और बताया कि कौम ने क्या हरकत की। अबू सुफियान ने यह सुनकर कहा कि यह ऐसा वाकया है कि मैं इसमें शरीक भी नहीं हूं लेकिन इससे बे-ताल्लुक भी नहीं हूं। यह बहुत ही बुरा हुआ है। अल्लाह की कसम! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अब यकीनन हमसे जंग करेंगे। अबू सुफियान ने यह भी कहा कि मेरी बीवी हिंद ने मुझे बताया है कि उसने एक भयानक ख्वाब देखा है। उसने देखा कि हजून जो कि वादी-ए-मुहस्सब की तरफ बैतुल्लाह से डेढ़ मील के फासिले पर एक पहाड़ है उसकी तरफ से खून का एक दरिया बहता हुआ आया और खंदमा तक पहुंच गया। खंदमा मिना के रास्ते में मक्का का एक मशहूर पहाड़ है। और लोगों ने इसे नापसंद किया।

(अस-सीरतुल हलबिया जिल्द 3 सफा 103 दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत) (फरहंग-ए-सीरत सफा 100, 116 ज़वार अकादमी कराची)

अर्थात वह खून बहता आ रहा है इससे वे लोग बहुत डर गए। बहरहाल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी इस वाकिये का जो बनू खुजाअह पर हमला हुआ था कश्फी तौर पर इल्म अल्लाह तआला ने दिया।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत मायमूना बिंत हारिस रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके पास रात गुज़ारी। आप नमाज़ के लिए वुज़ू करने के लिए उठे। आप वुज़ू की जगह पर थे कि मैंने सुना कि आपने तीन बार लब्बैक लब्बैक लब्बैक कहा अर्थात मैं हाजिर हूं, मैं हाजिर हूं, मैं हाजिर हूं। और फिर तीन बार ही नुसिर्तु नुसिर्तु नुसिर्तु भी कहा अर्थात तुम्हारी मदद की गई, तुम्हारी मदद की गई, तुम्हारी मदद की गई। जब आप वुज़ूकरके तशरीफ लाए तो कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मैंने सुना कि आपने तीन बार लब्बैक कहा और तीन बार ही नुसिर्तु कहा। क्या आपके पास कोई शख्स था जिससे आप बातें कर रहे थे। आपने फ़रमाया: बनू कअब बनू खुजाअह की एक शाखा का एक शख्स था जो बनू बक्र के खिलाफ रज्जिय्या शेर कहते हुए मुझे मदद के लिए पुकार रहा था। यह कश्फी रंग था और यह कह रहा था कि कुरैश ने उनके खिलाफ बनू बक्र बिन वायल की मदद की है। हज़रत मायमूना बयान करती हैं कि तीन दिन बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों को सुबह की नमाज़ पढ़ाई तो मैंने किसी को यह शेर पढ़ते हुए सुना:

या रब्बि इन्नी नाशिदन मुहम्मदन
हिल्फा अबीना व अबीहिल अतलदा

ऐ मेरे रब! मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उस अहद याद दिलाता हूं जो हमारे अबा-ए-अजदाद और उनके अबा-ए-अजदाद के दरमियान हुआ था।

एक दूसरी रिवायत में है कि उस रात की सुबह को जिस रात बनू नुफासा और बनू खुजाअह का वाकिया वतीर मुकाम पर हुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा से फ़रमाया: ऐ आयशा! खुजाअह में कोई वाकिया रोनुमा हुआ है। हज़रत आयशा रजियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या कुरैश इस अहद को तोड़ने की जुर्रत करेंगे जो आप और उनके माबैन है जबकि जंगों ने उन्हें पहले ही फना कर दिया है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उन्होंने वह अहद उस अम्र के लिए तोड़ा है जिसका इरादा अल्लाह तआला ने किया है। हज़रत आयशा रजियल्लाहु अन्हा ने कहा कि अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या इसमें भलाई है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हां इसमें भलाई है।

यानी यह तो अल्लाह की मर्जी थी वे अहद तोड़ें और फिर आगे उन्हें इसकी सजा मिले।

(मख़ज़ूज़ मिन सबुलिल हुदा जिल्द 5 सफा 201-202 दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत)(शरह़-ए-आलमा ज़रकानी जिल्द 3 सफा 380, 381 दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत)

बहरहाल इसी वाकिये का ज़िक्र हज़रत मसीह मौऊद रजियल्लाहु अन्हु ने भी किया है। अपने अंदाज में वह लिखते हैं कि हज़रत मायमूना फरमाती हैं कि एक रात मेरी बारी में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे हां सो रहे थे। जब आप तहज्जुद के लिए उठे तो आप वुज़ू फ़रमाते हुए बोले और मुझे आवाज़ आई कि आप फरमा रहे हैं लब्बैक लब्बैक लब्बैक। इसके बाद आपने फ़रमाया: नुसिर्तु नुसिर्तु नुसिर्तु। वह कहती हैं जब आप बाहर तशरीफ लाए तो मैंने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या कोई आदमी आया था जिससे आप बातें कर रहे थे। आपने फ़रमाया: हां मेरे सामने कश्फी तौर पर खुजाअह का एक वफ़्द पेश हुआ और वह शोर मचाते चले जा रहे थे कि हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उसके खुदा की कसम देकर कहते हैं कि तेरे साथ और तेरे बाप दादों के साथ हमने अहद किए थे और हम तेरी मदद करते चले आए हैं मगर कुरैश ने हमारे साथ बद-एहदी की और रात के वक्त हम पर हमला करके जबकि हममें से कोई सजदे में था और कोई रुकू में हमको कत्ल कर दिया अब हम तेरी मदद हासिल करने के लिए आए हैं। गरज़ मैंने देखा अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने देखा कि खुजाअह का आदमी खड़ा है। जब कश्फी तौर पर वह आदमी मुझे नज़र आया तो मैंने कहा लब्बैक लब्बैक लब्बैक। अर्थात मैं तुम्हारी मदद के लिए हाजिर हूं। तीन दफ़ा कहा। फिर मैंने कहा नुसिर्तु नुसिर्तु नुसिर्तु अर्थात तुम्हारी मदद की जाएगी। यह भी तीन दफा कहा। फिर हज़रत आयशा रजियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि उसी दिन सुबह के वक्त रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे घर तशरीफ लाए और आपने फ़रमाया: खुजाअह के साथ एक खतरनाक वाकिया पेश आया है। हज़रत आयशा फरमाती हैं कि मैंने समझ लिया कि खुजाअह के साथ खतरनाक वाकिया यही हो सकता है कि वह मक्का की सरहद पर हैं और मक्का वाले जिनका बनू बक्र के साथ अहद है वह खुजाअह पर हमला कर दें। मैंने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या यह मुमकिन है कि इतनी क़समों के बाद कुरैश अहद तोड़ दें और वह

खुजाअह पर हमला कर दें? आपने फ़रमाया: हां अल्लाह तआला की हिकमत के तहत वे इस अहद को तोड़ रहे हैं। और वह हिकमत यही थी कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हमले की इजाज़त नहीं थी और अहद टूटने से इजाज़त मिल गई। हज़रत आयशा कहती हैं कि मैंने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या इसका नतीजा अच्छा निकलेगा? आपने फ़रमाया: हां। नतीजा अच्छा ही निकलेगा।

(मख़ज़ूज़ मिन सीरत-ए-रूहानी, अनवारुल उलूम जिल्द 24 पृष्ठ 251 ता 252)

इसकी तफसील में लिखा है कि बनू बक्र और कुरैश की इस ज़ालिमाना कार्रवाई के बाद अम्र बिन सलम बनू खुजाअह के चालीस सवारों के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मदद तलब करने के लिए निकला। खुजाअह कबीले का रईस बुदैल बिन वरक़ा खुजाई भी इस जमाअत के साथ था। उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तफसील बताई कि उन्हें किस मुसीबत का सामना करना पड़ा है और कुरैश ने किस तरह उनके खिलाफ असलहा, आदमी और घोड़ों से बनू बक्र की मदद की है और किस तरह सफवान, इकरिमा और कुरैश के दूसरे रुअसा ने इस कत्ल-ए-आम में शिरकत की है। इस वक्त आप मस्जिद में सहाबा के साथ तशरीफ फरमा थे। जब वह अपनी बात कह चुके तो अम्र बिन सलम खुजाअह का सरदार खड़ा हुआ तो उसने कुछ अशआर पढ़कर मदद तलब की जिनमें से एक शेर यह भी था कि

या रब्बि इन्नी नाशिदन मुहम्मदन
हिल्फा अबीना व अबीहिल अतलदा

ऐ मेरे रब! मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वह अहद याद दिलाता हूं जो हमारे अबा-ए-अजदाद और उनके अबा-ए-अजदाद के दरमियान हुआ था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अम्र बिन सलम तेरी मदद की जाएगी।

(मख़ज़ूज़ मिन सबुलिल हुदा जिल्द 5 सफा 202-203 दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत)(अस-सीरतुल हलबिया जिल्द 3 सफा 103 दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत)
(फरहंग-ए-सीरत सफा 56 ज़वार अकादमी कराची)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि जब बनू खुज़ाह का कारवाँ आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास पहुँचा तो आपने उनसे पूछा: "तुम्हारे ख़याल में यह ज़ुल्म किसने किया है?" उन्होंने कहा: "बनू बक्र ने।" आपने फ़रमाया: "क्या सारे बनू बक्र ने?" उन्होंने कहा: "नहीं, बनू नुफ़ासा ने जिसका सरदार नौफ़ल बिन मुआविया है।" आपने फ़रमाया: "यह बनू बक्र का ही एक क़बीला है।"इसलिए बनू खुज़ाह ने जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को सारी बातें बता दीं तो आपने फ़रमाया: "अलग-अलग होकर वापस चले जाओ। अब तुम्हारी वापसी है तो क़ाफ़िले की सूरत में इकट्ठे न जाना बल्कि अलग-अलग जाना।" आपने यह इसलिए फ़रमाया कि किसी को यह मालूम न हो कि वह आपसे मुलाक़ात करके आ रहे हैं। इस मामले को ख़ुफ़िया रखा। इसलिए बनू खुज़ाह अलग-अलग होकर वापस चले गए। उनमें से कुछ लोग रास्ते में साहिल-ए-समंदर की तरफ़ हो लिए और बुदैल बिन वरक़ा समेत कुछ लोग आम रास्ते से गए।

हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) बयान करती हैं कि आप बनू कअब अर्थात खुज़ाह के मामले की वजह से बहुत गुस्से में आ गए। मैंने आपको इतने शिद्दत के गुस्से में कभी नहीं देखा।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि आपको खुज़ाह के वाक़िये की ख़बर मिली तो फ़रमाया: "मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं उनकी हर उस चीज़ से हिफ़ाज़त करूँगा जिससे मैं अपने अहल और घर वालों की हिफ़ाज़त करता हूँ।"

(सबुलुल हिदाया जिल्द 5 सफ़ा 203-204, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत(अस-सीरतुल हलबिया जिल्द 3 सफ़ा 104, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत)

इस ग़ज़वा की तफ़सील हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी बयान फरमाई है। अपने अंदाज़ में फ़रमाते हैं कि "आठवें सन हिजरी के रमज़ान के महीने... में रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस आख़िरी जंग के लिए रवाना हुए जिसने अरब में इस्लाम को क़ायम कर दिया। यह वाक़िया यूँ हुआ कि सुल्ह-ए-हुदैबिया के मौक़े पर यह फ़ैसला हुआ था कि अरब क़बाइल में से जो चाहें मक्का वालों से मिल जाएँ और जो चाहें मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ मिल जाएँ और यह कि दस साल तक दोनों फ़िरक़ों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ जंग की इजाज़त नहीं होगी सिवाए इसके कि एक दूसरे पर हमला करके मुआहिदा को तोड़ दे। इस मुआहिदा के मातहत अरब का क़बीला बनू बक्र मक्का वालों के साथ मिला था और खुज़ाह क़बीला मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ" मिल गया। "कुफ़्फ़ार-ए-अरब मुआहिदा की पाबंदी का ख़याल कम ही रखते थे ख़ासतौर पर मुसलमानों के मुक़ाबले में। इसलिए बनू बक्र को चूँकि क़बीला खुज़ाह के साथ पुराना इख़्तिलाफ़ था, सुल्ह-ए-हुदैबिया पर कुछ अर्सा गुज़रने के बाद उन्होंने मक्का वालों से मशवरा किया कि खुज़ाह तो मुआहिदा की वजह से बिल्कुल मुतमइन हैं। अब मौक़ा है कि हम लोग उनसे बदला लें। इसलिए मक्का के कुरैश और बनू बक्र ने मिलकर रात को बनी खुज़ाह पर छापा मारा और उनके बहुत से आदमी मार डाले। खुज़ाह को जब मालूम हुआ कि कुरैश ने बनू बक्र से मिलकर यह हमला किया है तो उन्होंने इस अहद-शिकनी की इत्तिला देने के लिए चालीस आदमी तेज ऊँटों पर फ़ौरन मदीना को रवाना किए और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मुतालबा किया कि बाहमी मुआहिदा की रवाय से अब आपका फ़र्ज़ है कि हमारा बदला लें और मक्का पर चढ़ाई करें। जब यह क़ाफ़िला रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास पहुँचा तो आपने फ़रमाया: 'तुम्हारा दुख मेरा दुख है। मैं अपने मुआहिदा पर क़ायम हूँ' और फ़रमाया कि 'यह बादल जो सामने बरस रहा है। (उस वक़्त बारिश हो रही थी) जिस तरह इससे बारिश हो रही है उसी तरह जल्दी ही तुम्हारी मदद के लिए इस्लामी फ़ौजें पहुँच जाएँगी।'"

(दीबाचा तफ़सीर-उल-कुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 सफ़ा 336-337)

एक रिवायत के मुताबिक़ आपने हज़रत ज़मरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) को कुरैश के पास भेजा और तीन उमूर में से एक को इख़्तियार करने के लिए कहा कि या तो वह बनू खुज़ाह के मक़तूलों की दियत अदा कर दें या बनू नुफ़ासा से लातअल्लुक़ी का इज़हार कर दें या हुदैबिया का मुआहिदा ख़त्म कर दें। यह तीन बातें हैं। हज़रत ज़मरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के क़ासिद के तौर पर उनके पास गए। मस्जिद-ए-हराम के दरवाज़े के पास ऊँटनी बिठाई और अंदर चले गए। कुरैश अपनी-अपनी जगहों पर थे। हज़रत ज़मरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें बताया कि वह हुज़ूर-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के क़ासिद हैं और उन्हें हुज़ूर-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का पैग़ाम दिया।

कुरैश के क़रज़ा बिन अब्दुल अम्र ने कहा कि अगर हम बनू खुज़ाह के मक़तूलों की दियत दे देंगे तो हमारे पास न अनाज रहेगा और न ही मवेशी रहेंगे क्योंकि इतने लोगों की दियत अदा करना एक भारी रक़म को चाहता है। जहाँ तक बनू नुफ़ासा से लातअल्लुक़ी का तअल्लुक़ है तो अहल-ए-अरब का कोई क़बीला नहीं जो उनकी तरह बैतुल्लाह की तअज़ीम करता हो। वह हमारे हलीफ़ हैं। हम उनकी दोस्ती से बराअत का एलान नहीं करेंगे। हम इससे अलग नहीं होंगे जब तक कि हमारे पास कुछ मौजूद है। हाँ हम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से जंग करेंगे। उसने कह दिया हम जंग करेंगे। इसलिए हम मुआहिदा ही को ख़त्म कर देते हैं अर्थात हुदैबिया का मुआहिदा।

हज़रत ज़मरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) हुज़ूर-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में आ गए और कुरैश की बातों से आपको आगाह किया। बहरहाल बाद में कुरैश को अपने किए पर पछतावा हुआ और उन्होंने अबू सुफ़ियान को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की तरफ़ भेजा।

(सबुलुल हिदाया जिल्द 5 सफ़ा 204-205, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत(फ़त्ह-ए-मक्का, बाशमील, सफ़ा 111, नफ़ीस अकादमी कराची)

इसके आने के बारे में भी अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को पहले बता दिया था कि अबू सुफ़ियान आ रहा है। और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने भविष्यवाणी के मुताबिक़ लोगों को बताया था। इसलिए अबू सुफ़ियान की तजदीद-ए-सुल्ह के लिए आमद हुई। इसकी तफ़सील में लिखा है कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अबू सुफ़ियान के मदीना आने से पहले सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से फ़रमाया: "अबू सुफ़ियान तुम्हारे पास आ रहा है वह कह रहा है मुआहिदा की तजदीद कर दो और सुल्ह में इज़ाफ़ा कर दो लेकिन वह नाराज़गी लेकर वापस जाएगा। उसकी कोई बात नहीं मानी जाएगी।"

एक रिवायत में है कि हारिस बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ अबू सुफ़ियान के पास गए। उन्होंने कहा कि इस अम्र में सुल्ह करना नागुज़ार है। अगर यह मामला हल न हुआ तो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने सहाबा समेत तुम पर हमला आवर होंगे। इसलिए अबू सुफ़ियान और उसका ग़ुलाम दो ऊँटनियों पर रवाना हुए। वह जल्दी-जल्दी चला और मदीना पहुँचा। वह सबसे पहले अपनी बेटी उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास आया जो कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की जौजा मुतह्हरा थीं। अबू सुफ़ियान ने इरादा किया कि वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बिस्तर पर बैठे परंतु हज़रत उम्मे

हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने बिस्तर लपेट दिया। अबू सुफ़ियान ने कहा: "ऐ मेरी बेटी! क्या यह बिस्तर मेरे क़ाबिल नहीं या मैं इसके क़ाबिल नहीं?"

हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि यह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का बिस्तर है। आप एक मुशरिक और नापाक शख़्स हैं। मैं पसंद नहीं करती कि आप रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बिस्तर पर बैठें।

उसने कहा कि "ऐ मेरी बेटी!" अबू सुफ़ियान ने कहा कि "ऐ मेरी बेटी! मेरे बाद तुम्हें शर ने आ लिया है।" उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा "नहीं बल्कि अल्लाह ने मुझे इस्लाम की तरफ़ हिदायत दी है और ऐ मेरे अब्बा! आप कुरैश के रईस और सरदार हैं। आपसे कुबूल-ए-इस्लाम में ताख़ीर कैसे हो सकती है?" उन्होंने उनको तबलीग़ की। आप बुतों की पूजा करते हैं जो न सुन सकते हैं और न देख सकते हैं।

अबूसुफ़ियान वहाँ से उठा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास चला गया। आप उस समय मस्जिद में थे। उसने कहा: "हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मैं सुलह-ए-हुदैबिया के वक्त मौजूद नहीं था। आप इस समझौते को नवीनीकृत कर दें और हमारे लिए अवधि बढ़ा दें।" आपने फ़रमाया: "अबूसुफ़ियान! क्या तू सिर्फ इसलिए आया है?" उसने कहा: "हाँ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या तुम्हारी तरफ से कोई बात हुई है?" उसने कहा: "अल्लाह की पनाह! हम अपनी सुलह-ए-हुदैबिया के समझौते पर कायम हैं।" उसने गलत बयानी की हमने इसमें कोई तब्दीली नहीं की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हम भी अपने समझौते और सुलह पर कायम हैं। हमने भी कोई तब्दीली नहीं की। हमारा समझौता हुआ था, ठीक है। हमने भी कोई तब्दीली नहीं की।"

अबूसुफ़ियान अपनी बात दोहराता रहा, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और उनसे कहा: "मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से बात करो या अपनी तरफ से लोगों में पनाह (सुरक्षा) का एलान कर दो।" हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "मेरी पनाह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पनाह में है।"

अबूसुफ़ियान फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसी तरह गुफ्तगू की, जिस तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से की थी। फिर वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और उनसे कहा: "लोगों में तुमसे ज़्यादा सिला-ए-रहमी (रिश्तेदारी का ख्याल) करने वाला कोई नहीं है। सुलह की अवधि में इज़ाफ़ा कर दो और समझौते की ताज़ीद (नवीनीकरण) कर दो। तुम्हारा साथी तुम्हारी बात को नहीं टालेगा।" उन्होंने कहा: "मेरी पनाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पनाह में है।"

फिर वह नाकाम होकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और कहा: "हे अली! तुम रिश्तेदारी में मेरे सबसे करीब हो। मैं एक ज़रूरी काम के लिए आया हूँ, लेकिन खाली हाथ वापस नहीं जाना चाहता। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के हुज़ूर में मेरी सिफारिश करो।" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "अबूसुफ़ियान! तेरे लिए हलाकत (विनाश) है!" उसने जवाब दिया: "तेरे लिए हलाकत!" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर कहा: "जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी बात का अज़्म (निर्णय) कर लें, तो हम में इस्तिताअत (सामर्थ्य) नहीं कि हम आपसे उस पर गुफ्तगू कर सकें। हमारी कोई ताक़त नहीं।"

अबूसुफ़ियान ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा: "हे अली! मामले मुझ पर शिद्दत (कठिनाई) से गुज़र रहे हैं, मुझे कोई मशवरा दो।" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "अल्लाह की क़सम! मेरे इल्म में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो तुझे फ़ायदा दे सके, लेकिन तुम बनू किनाना के रईस हो। उठो और लोगों के दरमियान पनाह (सुरक्षा) का एलान करो, फिर अपने शहर लौट जाओ।"

अबूसुफ़ियान मस्जिद-ए-नबवी में गया और ऊँची आवाज़ में कहा: "हे लोगो! मैंने लोगों के बीच अमन (शांति) का एलान कर दिया है। मेरा ख़्याल है, तुम मेरे अहद (वादे) को नहीं तोड़ोगे।" फिर वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा: "हे मुहम्मद! मैंने लोगों के दरमियान अमन का एलान कर दिया है।" आपने फ़रमाया: "हे अबूहंज़ला! यह सिर्फ तू ही कह रहा है (यानी हम इससे सहमत नहीं)। यह तेरा यकतरफा (एकतरफा) एलान है।" फिर वह अपने ऊँट पर सवार होकर निराश होकर वापस चला गया।

(सबुल अल-हुदा, जिल्द 5, पेज 205-207, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

एक रिवायत के मुताबिक, उसने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी बात की थी कि वह सिफारिश कर दें, लेकिन उन्होंने भी माफ़ी कर ली।

(मुंतखब सीरत-ए-मुस्तफा , प्रोफ़ेसर डॉ. अब्दुल अज़ीज़ बिन इब्राहीम अल-उमरी, पेज 392, दार अस-सलाम)

और इस तरह, अबूसुफ़ियान किसी भी नए अहद-ओ-पैमान (समझौते) या इत्तिफाक-ए-राय (सहमति) की कोशिश में नाकाम-ओ-नामुराद (असफल और निराश) वापस लौट आया। जब वह अपनी क़ौम में पहुँचा और सारी बात बताई, तो उन्होंने भी उसे बुरा-भला कहा: "तुम कोई भी भलाई की बात लेकर नहीं आए।"

(ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 3, पेज 1190, अबूज़ुहरा, दारुल तुर्रास, बैरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी तारीखी लिहाज़ से इस घटना को बयान फ़रमाया है। उन्होंने लिखा है:

"मक्का वालों ने अबूसुफ़ियान को मदीना भेजा ताकि वह किसी तरह मुसलमानों को हमले से रोक सके। अबूसुफ़ियान ने मदीना पहुँचकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दबाव डालना शुरू किया कि चूँकि मैं सुलह-ए-हुदैबिया के वक्त मौजूद नहीं था, इसलिए नए सिरे से समझौता किया जाए। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि जवाब देने से राज़ (योजना) खुल जाता। अबूसुफ़ियान ने मायूसी की हालत में घबराकर मस्जिद में खड़े होकर एलान किया: 'हे लोगो! मैं मक्का वालों की तरफ से नए सिरे से आप लोगों के लिए अमन का एलान करता हूँ।' यह सुनकर मुसलमान उसकी बेवकूफी पर हँस पड़े, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'अबूसुफ़ियान! यह बात तुम यकतरफा कह रहे हो, हमने कोई ऐसा समझौता तुमसे नहीं किया।'"

(दीबाचा तफ्सीर अल-कुरान, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पेज 337)

हमारे रिसर्च सेल वाले इस बारे में एक नोट लिखते हैं:

"अबूसुफ़ियान का यह कहना कि 'मैं सुलह-ए-हुदैबिया के वक्त मौजूद नहीं था,' उनके नज़दीक मुतालिबा (संदेहास्पद) है। हो सकता है कुछ लोगों ने ऐसा लिखा हो, इसलिए उन्होंने इस नुक्ते को उठाया। आम समझने वाले के लिए यह ज़रूरी नहीं, लेकिन जो लोग तारीखी मसायल में गहराई में जाना चाहते हैं, वह शायद यह सवाल उठाएँ कि यह कहना कि 'मैं मौजूद नहीं था' मुतालिबा है, क्योंकि तारीख व सीरत की कुछ किताबों में इस मौके पर (यानी मदीना आने पर) अबूसुफ़ियान का यह कथन मौजूद है, लेकिन अक्सर किताबें खामोश हैं। और मुअर्रिखीन (इतिहासकारों) की अक्सरियत (बहुमत) ने अबूसुफ़ियान की इस बात का ज़िक्र नहीं किया।

तीसरी बात यह है कि सुलह-ए-हुदैबिया के वक्त क्या वाक़ई अबूसुफ़ियान मौजूद नहीं था? वाकिदी की किताब 'अल-मग़ाज़ी', सीरत हलबिया और कुछ अन्य किताबों में यह बयान है कि वह उस मौके पर मौजूद नहीं था, लेकिन तारीख व सीरत की अक्सर किताबों में यह बयान हुआ है कि सुलह-ए-हुदैबिया के मौके पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का भेजा था ताकि वह अबूसुफ़ियान और दूसरे कुरैशी सरदारों को बताएँ कि हम लड़ाई के लिए नहीं आए हैं। इससे यह मालूम होता है कि अबूसुफ़ियान उस वक्त मौजूद था। बल्कि यह गौर करने वाली बात है कि हुदैबिया के मौके पर वह न तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से गुफ्तगू करने आया और न ही समझौता करने के लिए खुद आया, हालाँकि कुरैश का सरदार वह खुद था, और न ही इस समझौते पर उसके दस्तखत या गवाही मौजूद है। इसलिए मुमकिन है कि मदीना में जब उसने यह कहा कि 'मैं सुलह-ए-हुदैबिया के वक्त मौजूद नहीं था,' तो उसकी मुराद यह हो कि 'समझौते के मौके पर मैं मौजूद नहीं था,' या वाक़ई वह वहाँ मौजूद नहीं था, और यह भी मदीना में आकर कहा हो। और उसने यही बात दोहराई हो कि 'क्योंकि मेरे दस्तखत नहीं हैं।'

बहरहाल, जैसा कि मैंने कहा, यह रिसर्च सेल वालों का ख़्याल है, लेकिन खुद ही यह सारी तफ्सील जो वह बयान कर रहे हैं, उससे अपने इसी ख़्याल को रद्द भी कर रहे हैं कि वह समझौते में शामिल नहीं था, क्योंकि समझौते पर उसके दस्तखत बावजूद सरदार होने के नहीं हैं। यह लिख रहे हैं। तो अबूसुफ़ियान ने इसी को जुएज़ा (बहाना) बनाया होगा। इसलिए किसी शक में मुब्तिला होने की ज़रूरत नहीं कि उसने मदीना आकर यह कहा कि 'मैं समझौते में शामिल नहीं था।' यह उसने कहा तो ठीक कहा था। हाँ, 'शामिल होने' और 'मौजूद होने' के अल्फ़ाज़ के बयान में रावी की गलती हो सकती है, लेकिन वाक़िआत इस बात को ज़्यादा सही बताते हैं कि उसने अपने समझौते का हिस्सा न होने का एलान किया था। यही बात सामने आती है, और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी यही बात लिखी है कि उसने यह कहा, और आपने इसे माना है। और यही सही लगता है कि वह समझौते में शामिल नहीं था, और हम यही समझते हैं कि इससे मुराद यही है कि 'मैं मौजूद नहीं था।'

बहरहाल, यह तो एक तारीखी मसला था, जिसे मैंने बयान कर दिया। इसलिए इसमें कोई इबहाम (संदेह) की ज़रूरत नहीं है, न कोई ऐसा सवाल उठता है। यह बात बड़ी वाज़ेह (स्पष्ट) है।"

ख़ैर इस अभियान पर जाने के विवरण के बारे में लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गोपनीयता के साथ यात्रा की तैयारी शुरू की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को यात्रा की तैयारी का आदेश दिया लेकिन यह नहीं बताया कि कहाँ जाना होगा। ऐसा ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया: "सफर के लिए मेरा सामान तैयार कर दो।" यह कहकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर से बाहर तशरीफ ले गए तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बेटी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास दाखिल हुए। उस वक्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामान को तैयार कर रही थीं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा: "क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का किसी ग़ज़वा के लिए जाने का इरादा है?" हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा खामोश रहीं। फिर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे कि शायद रोमियों की तरफ जाने का इरादा हो या शायद अहल-ए-नज्द की तरफ जाने का इरादा हो या शायद क़ुरैश की तरफ निकलने का इरादा हो, लेकिन उनके साथ तो मुआहिदा की मियाद अभी बाकी है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा उनके हर सवाल पर खामोश रहीं और कोई जवाब नहीं दिया। इतने में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ लाए तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! कहीं निकलने का इरादा है?" तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हाँ।" फिर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बनू असफर अर्थात रोमियों की तरफ जाने का इरादा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "नहीं।" हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अहल-ए-नज्द की तरफ जाने का इरादा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "नहीं।" हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि शायद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़ुरैश की तरफ जाने का इरादा है। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हाँ।" इस पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि क्या आपके और उनके दरमियान मुआहिदा नहीं है? अर्थात सुलह-ए-हुदैबिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हें ख़बर नहीं हुई कि उन्होंने बनू काब अर्थात खुज़ाआ क़बीले के साथ क्या किया है।"

(मग़ाज़ी सैय्यिदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मूसा बिन उक़्बा, जिल्द 3, सफ़्हा 119-121)

इस वाक़िए की मज़ीद वज़ाहत करते हुए सीरत हलबिया में लिखा है कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप से पूछा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप ने सफर का इरादा फ़रमाया है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि तो फिर मैं भी तैयारी करूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरयाफ़्त किया कि "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप ने कहाँ का इरादा फ़रमाया है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क़ुरैश के मुक़ाबले का।" मगर साथ ही यह भी फ़रमाया कि अबू बक्र इस बात को अभी पोशीदा ही रखना। ग़रज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को तैयारी का हुक्म दिया मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को इससे बेख़बर रखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कहाँ जाने का इरादा है। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देहात और इर्द-गिर्द के मुसलमानों को पैग़ामात भिजवाए और उनसे इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआला और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है वह रमज़ान के महीने में मदीना हाज़िर हो जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एलान के मुताबिक़ क़बाइल-ए-अरब मदीना आने शुरू हो गए। जो क़बाइल मदीना पहुँचे उनमें बनू असलम, बनू ग़िफार, बनू मुज़ैना, बनू अशजा और बनू जुहैना थे।

(अस-सीरतुल हलबिया, जिल्द 3, सफ़्हा 107-108, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)

एक रिवायत के मुताबिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर मशवरा किया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर मशवरा किया और फिर तमाम मुसलमानों को सफर की तैयारी का इरशाद फ़रमाया।

(सबुलुल हिदा, जिल्द 5, सफ़्हा 208, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)

इस वाक़िए का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यूँ लिखा है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी एक बीवी से कहा कि मेरा सामान-ए-सफर बाँधना शुरू करो। उन्होंने रुख़्त-ए-सफर बाँधना शुरू किया और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि मेरे लिए सत्तू वग़ैरह या दाने वग़ैरह भूनकर तैयार करो। ऐसी ही खाने की चीज़ें उन दिनों में होती थीं। इसलिए उन्होंने मिट्टी वग़ैरह फटक कर दानों से निकालनी शुरू की। दाने साफ़ करने शुरू किए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु घर में बेटी के पास आए और उन्होंने यह तैयारी देखी तो पूछा: "आयशा! यह क्या हो रहा है? क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किसी सफर की तैयारी है?" वह कहने लगीं कि सफर की तैयारी ही मालूम होती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर की तैयारी के लिए कहा है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे कोई लड़ाई का इरादा है? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया कि मुझे तो कुछ पता नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरा सामान-ए-सफर तैयार करो और हम ऐसा कर रही हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया हम तो सामान तैयार कर रहे हैं। कहाँ जाना है, किस लिए जाना है? हमें तो नहीं पता। दो-तीन दिन के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा देखो तुम्हें पता है खुज़ाआ के आदमी इस तरह आए थे और फिर बताया कि यह वाक़िया हुआ है और मुझे ख़ुदा ने इस वाक़िए की पहले से ख़बर दे दी थी कि उन्होंने ग़द्दारी की है और हमने उनसे मुआहिदा किया हुआ है। अब यह ईमान के ख़िलाफ़ है कि हम डर जाएँ और मक्का वालों की बहादुरी और ताक़त देखकर उनके मुक़ाबले के लिए तैयार न हों। ख़ैर हमने वहाँ जाना है। तुम्हारी क्या राय है? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप ने तो उनसे मुआहिदा किया हुआ है और फिर वह आप की अपनी क़ौम है।" मतलब यह था कि क्या आप अपनी क़ौम को मारेंगे? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हम अपनी क़ौम को नहीं मारेंगे, मुआहिदा शिकनों को मारेंगे।" फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का तो अपना मिज़ाज था, उन्होंने कहा: "बिस्मिल्लाह। मैं तो रोज़ दुआएँ करता था कि यह दिन नसीब हो और हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफाज़त में कुफ्फार से लड़ें।" रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अबू बक्र बड़ा नर्म तबीयत का है मगर कौल-ए-सादिक़ उमर की ज़बान से जारी होता है। सही बात तो उमर ने की है।" फ़रमाया कि तैयारी करो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्द-गिर्द के क़बाइल को एलान भिजवाया कि हर शख़्स जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता है वह रमज़ान के इब्तिदाई दिनों में मदीना में जमा हो जाए।

(माख़ूज़ अज़ सीरत-ए-रूहानी (7) अनवारुल उलूम, जिल्द 24, सफ़्हा 260-261)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस सफर को पोशीदा रखने के लिए मुख़्तलिफ़ तदबीरें इख़्तियार फरमाईं। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर से पहले आठ आदमियों पर मुश्तमिल एक पार्टी को हज़रत अबू क़तादा बिन रिबई रज़ियल्लाहु अन्हु की क़यादत में वादी-ए-इज़म की तरफ, मक्का की मुख़ालिफ सिम्त भेजा ताकि गुमान करने वाला गुमान करे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस सिम्त जाने का अज़्म कर रहे हैं और ख़बर न फैल सके। इज़म मदीना से छत्तीस मील के फासिले पर मशरिक की तरफ नज्द में एक वादी है।

(सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द नहम, सफ़्हा 111, दारुस्सलाम)

(फरहंग-ए-सीरत, सफ़्हा 45, ज़वार अकादमी, कराची)

इसके अलावा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना के आस-पास कुछ आदमी रवाना कर दिए और उन सब की ड्यूटी यह थी कि कोई भी अजनबी शख़्स मक्का की तरफ जा रहा हो तो उसे वापस लौटा दिया जाए। इस सारे काम की निगरानी के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुक़र्रर किया गया जो बतौर निगरान चक्कर लगाते रहे। यह सारी तदबीरें इख़्तियार करने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने ख़ुदा के हुज़ूर दुआ के लिए हाथ उठाए और अर्ज़ किया:

"अल्लाहुम्मा खुज़ अला अस्माइहिम व अब्सारिहिम फला यरौना इल्ला बग़ातन व ला यस्मऊना बिना इल्ला फजअतन।"

(सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, डॉ. सलाबी, मुतरजिम, जिल्द 3, सफ़्हा 384-385)(दाइरा मआरिफ, जिल्द 9, सफ़्हा 72, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक और दुआ भी मिलती है और वह यह है कि:

"अल्लाहुम्मा खुज़िल उयूना वल अख़बारा अन क़ुरैशिन हत्ता नबग़तहा फी बिलादिहा।"

(तारीखुत तबरी, जिल्द 2, सफ़्हा 155, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)

इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर शुरू फ़रमाया। यह मज़ीद तफ़सील है। इंशाअल्लाह आइंदा भी चलेगी।

इस वक्त दुनिया के उमूमी हालात के लिए भी मैं कहना चाहता हूँ। अक्सर कहता हूँ दुआएँ करते रहें। जंग के फैलने के इमकानात बढ़ते चले जा रहे हैं और अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला इस की तबाहकारी से हमें महफ़ूज़ रखे, क्योंकि अब तो ईरान पर इस्राईल ने हमला कर दिया है और यह जंग की हालत ख़तरनाक सूरत इख़्तियार कर चुकी है।

इस्राईल की हुकूमत के यह लोग तो अब यही चाहेंगे कि एक-एक करके तमाम मुसलमान मुल्कों को नुकसान पहुँचाएँ लेकिन मुसलमान मुल्क सोए हुए हैं और अपनी तरक़्क़ी और अपनी दूसरी तरजीहात जो हैं उन्हीं में डूबे हुए हैं और उन को समझ नहीं आ रही है कि क्या होना है। मुसलमानों के न तो अमल रहे हैं न उनकी दुआ की तरफ तवज्जोह है और ऐसी हालत में फिर जो नुकसान पहुँचेगा उस का यह तसव्वुर भी नहीं कर सकते। अल्लाह तआला उन को अक़्ल दे और यह इस तरफ तवज्जोह करें और अपनी इकाई क़ायम करने की कोशिश करें। यह नहीं कि फलाँ फिरका है, फलाँ फिरका है तो हम उस की मदद नहीं कर रहे। सब मुल्क ख़तरे में हैं क्योंकि

"अल-कुफ़्रु मिल्लतुन वाहिदा"

हो चुका है, कुफ्फ़ार सब एक मिल्लत-ए-वाहिदा बन गए हैं और मुसलमानों को भी उम्मत-ए-वाहिदा बनना पड़ेगा तभी उन की बचत है, इस के बग़ैर कोई चारा नहीं।

अल्लाह तआला हर मासूम को, हर मज़लूम को बड़े नुकसान से बचाए। और हमें दुआओं की तरफ बहुत ज़्यादा तवज्जोह देनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

करते हुए फ़रमाया कि बच्चों को फोन और iPad आदि से दूर रखें।

फरीद अनवर काहलून साहिब कहते हैं कि खाकसार ने 2010 में ख्वाब देखा था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम खड़े हैं और आपके बाएं हाथ में एक छड़ी है और दूसरी तरफ कुछ अहबाब खड़े हैं। आप खाकसार को आगे आने का फ़रमाते हैं और कुछ देर बाद फ़रमाते हैं "आइए तस्वीर खिंचवा लें"। मैंने यह ख्वाब हुज़ूर-ए-अनवर की खिदमत में सुनाया। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: बहुत मुबारक ख्वाब है। हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात करके और तस्वीर खिंचवाकर मुझे यकीन हो गया है कि मेरा यह ख्वाब आज पूरा हो गया है।

एक दोस्त असद रसूल साहिब बयान करते हैं कि मेरी हुज़ूर-ए-अनवर से पहली मुलाकात थी। मैंने हुज़ूर-ए-अनवर के वजूद में एक बेहद शफीक़ और मोहब्बत करने वाला रूहानी बाप पाया है जो हमारा दर्द रखता है। दौरान-ए-मुलाकात जब मैंने आका से तबर्रुक अता किए जाने की दरख्वास्त की तो हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि पहले अपनी बीवी को पाकिस्तान से लेकर आओ फिर तबर्रुक दूंगा।

एक अफ़्रीकी मूल की नवम्बई अहमदी खातून हबीबा डाबोह साहिबा बयान करती हैं: मैंने कुछ अरसे पहले ही बैअत की है। अपने प्यारे इमाम के साथ मिलकर एक अजीब सी खुशी का एहसास है जो बयान नहीं किया जा सकता।

एक दोस्त बाबर अब्दुल ग़फ़्फार साहिब बयान करते हैं कि मैं बहुत खुश हूं कि आज खुदा ने मुझे यह दिन दिखाया है। मैं महसूस करता हूं कि जैसे मेरा वजूद जन्नत में परवाज कर रहा है। दौरान-ए-मुलाकात जब मैं अपने एहसासात पर काबू न पा सका तो रो पड़ा। अब यूं महसूस कर रहा हूं जैसे मेरी एक नई पैदाइश हुई है।

एक साहिब मसरूर अब्दुल कादिर साहिब बयान करते हैं कि खलीफा-ए-वक्त से पहली मुलाकात थी। अल्फ़ाज़ में बयान नहीं कर सकता इस वक्त जो मेरे दिल की कैफ़ियत है। दौरान-ए-मुलाकात मुझे यूं मालूम होता था जैसे हुज़ूर-ए-अनवर के गिर्द रोशनी का एक हाला है। हुज़ूर-ए-अनवर के क़ुर्ब में गुज़ारे हुए यह कुछ लम्हात मेरी जिंदगी के सबसे क़ीमती लम्हात हैं जो मैं रहते दम तक याद रखूंगा। हुज़ूर-ए-अनवर से आज की यह मुलाकात मुझे अल्लाह तआला के सौ गुना और क़रीब ले आएगी। मैंने अज़्म कर लिया है कि अब हर रोज़ अच्छाई की तरफ ही क़दम बढ़ाऊंगा। इंशाअल्लाह।

एक दोस्त रामेश खान साहिब बयान करते हैं। हुज़ूर-ए-अनवर से यह मेरी पहली मुलाकात थी। मुलाकात से पहले मुझे घबराहट और बेचैनी थी। लेकिन जैसे ही मेरा हाथ हुज़ूर-ए-अनवर के हाथ को छुआ तो मेरी सारी घबराहट और बेचैनी खुद ब खुद गायब हो गई और मुझे बहुत सुकून और इत्मीनान नसीब हुआ।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम साढ़े नौ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुस्समी तशरीफ लाकर नमाज़-ए-मगरिब व इशा जमा करके अदा कीं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ ले गए।

(जारी है)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अलैहि वसल्लम अमानत की अदायगी का कितना एहसास रखते थे और किस तरह जंग के दौरान में भी दुश्मन क़ौम के अमवाल पर बे-जा क़ब्ज़ा करना जायज़ नहीं समझते थे। मौजूदा ज़माना इंतेहाई तरक़्क़ी याफ़्ता दौर कहलाता है मगर आजकल भी कभी ऐसा वाक़िया नहीं हुआ कि जंग के दौरान दुश्मन क़ौमों के जानवर हाथ आ गए हों तो उन्हें दुश्मन की फौज की तरफ वापस कर दिया गया हो। लड़ने वालों के अमवाल आजकल जंग में हलाल समझे जाते हैं और लूट-खसोट एक रोज़मर्रा का खेल समझा जाता है मगर बावजूद इसके वह बकरियां एक ऐसे शख़्स की थीं जो इस्लामी फौजों के मुक़ाबले में बरसर-ए-पैकार था, और बावजूद इसके कि इन बकरियों के क़िले में वापस चले जाने का यह नतीजा निकलता था कि महीनों तक उन्हें अपनी ग़िज़ा का सामान मुहैया हो जाता और लड़ाई लंबी हो जाती, फिर भी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बर्दाश्त न किया कि अमानत में ख़ियानत हो बल्कि आपने फ़रमाया: बकरियों का मुंह क़िले की तरफ कर दो और उन्हें इस तरफ को हांक दो ताकि अमानत में ख़ियानत वाक़ई न हो।

इस तरह रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मुसलमान होते ही पहला सबक यह दिया कि जब कोई अमानत तुम्हारे पास रख दी जाए तो तुम्हारा फर्ज़ है कि इंतिहाई मुश्किलात में भी उसकी हिफाज़त करो और जिसकी चीज़ है उसे वापस पहुंचाओ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह सबक सीखा और उन्होंने भी इस पर ऐसी सख़्ती से अमल किया जिसकी नज़ीर आज तहज़ीब व शाइस्तगी की दावेदार क़ौमों में भी कहीं नज़र नहीं आ सकती।

यह कितना शानदार नमूना है जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने दिखाया कि हम्स जो ईसाइयों का एक मर्कज़ी शहर था, उस पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया और उन्होंने लाखों रुपया ईसाइयों से टैक्स के तौर पर वसूल कर लिया। लेकिन जब उन्हें जंगी मसलहतों के मातहत इस शहर को खाली करना पड़ा तो उन्होंने वहां के ज़िम्मेदार अफ़राद को बुलाया और उनका सारा रुपया उनको वापस कर दिया और कहा: हमने तुमसे यह टैक्स इसलिए लिया था कि हम तुम्हारे जान-ओ-माल की हिफाज़त करेंगे। मगर अब चूंकि हालात मखदूश हो रहे हैं और हम इस शहर को छोड़ रहे हैं, इसलिए हम दीयानत व अमानत के उसूल के खिलाफ यह बात समझते हैं कि तुम्हारा रुपया अपने पास रखें। चुनांचे लाखों रुपया उन्हें वापस कर दिया गया। तारीख बताती है कि इस वाक़िए ने ईसाइयों के कुलूब पर ऐसा गहरा असर छोड़ा कि जब मुसलमानों का लश्कर शहर से निकला तो वह साथ-साथ अलविदा कहने के लिए चल पड़े। उनकी आंखों से आंसू बहते जाते थे और वह कहते जाते थे कि ख़ुदा तुम्हें फिर दोबारा वापस लाए कि हमने तुम्हारे जैसे नेक हाकिम आज तक नहीं देखे।

इसी तरह इस्लाम ने हुकूमत को भी अमानत क़रार दिया है और हुक्म दिया है कि जब यह अमानत तुम्हारे सुपुर्द हो तो तुम इसमें कभी ख़ियानत न करो और हमेशा हुकूमत की बागडोर ऐसे लोगों के हाथ में दो जो हुकूमती ज़िम्मेदारियों को पूरी दीयानत के साथ अदा करने वाले हों। और तारीख बताती है कि मुसलमानों ने इस हुक्म पर भी इंतिहाई सख़्ती के साथ अमल किया है।

गिबन यूरोप का एक मशहूर ईसाई मुअर्रिख है। उसने रोम के हालात के मुताल्लिक एक तारीखी किताब लिखी है। वह इस किताब में मलिक शाह के मुताल्लिक जो अलप अरसलान का बेटा था, बयान करता है कि अभी छोटी उम्र का था कि उसका वालिद फौत हो गया। उसके मरने के बाद मलिक शाह के एक चाचा, एक चचा जाद भाई और एक सगे भाई ने बिल-मुक़ाबिल बादशाहत का दावा कर दिया और आपस में खाना जंगी शुरू हो गई। निज़ामुद्दीन तूसी मलिक शाह के वज़ीर-ए-आज़म थे और चूंकि वह शिया थे, उन्होंने मलिक शाह से दरख्वास्त की कि आप मेरे साथ इमाम मूसा रज़ा के मज़ार पर दुआ के लिए तशरीफ ले चलें ताकि अल्लाह तआला इस जंग में आप को कामयाब फ़रमाए। मलिक शाह चल पड़ा और उसने वहां दुआ की। जब दुआ से फारिग हुए तो मलिक शाह ने निज़ामुल मुल्क तूसी से पूछा कि बताइए आप ने क्या दुआ की है? उसने कहा: मैंने तो यह दुआ की है कि ख़ुदा तआला आप को फतह बख़्शे। मलिक शाह ने कहा: लेकिन मैंने तो यह दुआ नहीं की। मैंने तो यह दुआ की है कि ऐ मेरे रब! अगर मेरा भाई मुसलमानों पर हुकूमत करने का मुझसे ज़्यादा अहल है तो तू उसे कामयाबी बख़्श और मेरी जान और मेरा ताज मुझसे वापस ले ले। अगर मैं इस अमानत को ज़्यादा उम्दगी से अदा करने के काबिल हूं तो फिर तू मुझे कामयाबी अता फ़रमा।

गिबन एक निहायत ही मुतअस्सिब ईसाई मुअर्रिख है मगर इस वाक़िए के सिलसिले में वह बे-इख़्तियार लिखता है कि इस मुसलमान नौजवान शहज़ादे के इस क़ौल से ज़्यादा पाकीज़ा और वसीओ नज़र यह तारीख के सफ़्हात में तलाश करना नामुमकिन है और ईसाइयत के बूढ़े-बूढ़े बादशाह भी ऐसे अख़लाक का मुज़ाहिरा नहीं करते। यह रूह जो मुसलमानों के अंदर पैदा हुई, इसी बात का नतीजा थी कि इस्लाम ने उनके दिमाग़ों में बड़ी सख़्ती के साथ यह बात मर्कूज़ कर दी थी कि हुकूमत भी एक अमानत है और तुम्हारा काम यह है कि तुम कभी किसी अमानत में ख़ियानत न करो।

(तफ्सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, सफ़्हा 131 ता 133, मतबूआ क़ादियान 2010)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

"नमाज़ पढ़ते हुए यह ध्यान रखें कि हम ख़ुदा के सामने खड़े हैं। ख़ुदा हमें देख रहा है। इसलिए नम्रता और विनम्रता के साथ खड़े हों और जो शब्द दोहरा रहे हैं, उन्हें समझ कर दोहराएँ

"जो भी अच्छा इस्लामी नाम लगे, रख लो। अगर 'मुहम्मद' नाम रखना है, तो वह भी रख लो

एक अच्छा मुसलमान बनने के लिए क्या आवश्यक है?"

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आख़िरी ज़माने में मसीह और महदी का ज़ुहूर होगा। तुम उसे पाना और उससे मिलना और मेरा सलाम उसे पहुँचाना।

यह हमारी ज़िंदगी का सबसे बेहतरीन अवसर था कि हमने पहली बार खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपनी आँखों से देखा। अस्पताल की स्थापना हमारे लिए किसी नेमत से कम नहीं, इससे पहले किसी धर्म ने मानवता के बारे में इस तरह से नहीं सोचा था। मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ कि खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपने बीच पाया और इस बात की भी ख़ुशी है कि हमने अपने मध्य विभिन्न देशों के अहमदी भाइयों को एक साथ पाया।

मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि मुझे इस अवसर पर खलीफ़तुल मसीह को देखने का मौका मिला। इससे पहले मैं केवल हज़ूर की तक़रीरें सुना करती थी, लेकिन अब उन्हें देखना ऐसा अनुभव था जिसे मैं बयान नहीं कर सकती।

23 अक्टूबर 2018, मंगलवार

(भाग दो)

आज के इस समारोह में शामिल होने वाले मेहमानों में लगभग छह सौ पुरुष और करीब दो सौ महिलाएं शामिल हुईं। कुछ प्रमुख मेहमानों का ज़िक्र पहले ही हो चुका है। इसके अलावा, कई डॉक्टर, वकील, स्थानीय व्यवसायी, मीडिया संस्थानों के विभिन्न प्रतिनिधि, सरकार के विभिन्न विभागों से जुड़े लोग और जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों से संबंध रखने वाले व्यक्ति भी शामिल हुए।

रिव्यू ऑफ रिलिजन्स स्पेनिश संस्करण का लोकार्पण

बाद में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ एक कॉन्फ्रेंस रूम में तशरीफ ले आए, जिसे एक छोटे आकार के मार्की से सजाकर तैयार किया गया था। यहां प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन भी हुआ।

सबसे पहले, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस बरकत भरे अवसर पर पत्रिका 'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' के स्पेनिश अंक का औपचारिक लोकार्पण किया।

23 अक्टूबर 2018 का दिन स्पेनिश भाषी दुनिया के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाएगा, जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' की स्पेनिश वेबसाइट और स्पेनिश अंक का उद्घाटन किया। अब, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से, इस महान पत्रिका और इसकी वेबसाइट के माध्यम से अहमदियत का संदेश लाखों-करोड़ों स्पेनिश भाषी लोगों के घरों तक पहुंचेगा।

'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' वह बरकत भरी पत्रिका है जिसे हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1902 में पश्चिमी दुनिया को इस्लाम की ख़ूबसूरत और सच्ची शिक्षाओं से परिचित कराने के लिए जारी किया था।

10 जून 2018 को, हुज़ूर अनवर ने 'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' विभाग को मुलाकात के दौरान यह निर्देश दिया था कि अब जल्द ही आपको स्पेनिश संस्करण की आवश्यकता पड़ेगी, क्योंकि स्पेन की आबादी 4.6 करोड़ है और इसी तरह अमेरिका व लैटिन अमेरिका के देशों में 40 करोड़ से अधिक आबादी स्पेनिश भाषा बोलती है।

बाद में, हुज़ूर अनवर ने अता-उल-मुनईम तारिक साहिब (इंचार्ज, सेंट्रल स्पेनिश डेस्क, स्पेन) को इस पत्रिका का चीफ एडिटर और मकरमा मारिया इसाबेल लुसासेरना साहिबा (जिनका संबंध स्पेन से है) को इस पत्रिका का डिप्टी एडिटर नियुक्त किया। साथ ही, मकरम फाइज़ अहमद साहिब (ग्वाटेमाला) को इस पत्रिका का कोऑर्डिनेटर बनाया। इसके अलावा, हुज़ूर अनवर ने यह निर्देश दिया कि स्पेनिश अंक का लोकार्पण ग्वाटेमाला में नासिर अस्पताल के उद्घाटन समारोह के साथ होगा।

नासिर अस्पताल के उद्घाटन समारोह के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रेस मार्की में तशरीफ लाए और 'लॉन्च' बटन दबाकर स्पेनिश 'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' के ऑनलाइन संस्करण का लोकार्पण किया।

हुज़ूर अनवर ने यह निर्देश दिया था कि 'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' का पहला स्पेनिश अंक मानवता की सेवा पर आधारित इस्लामी शिक्षाओं पर होना चाहिए। इसी के अनुसार, यह पहला अंक प्रकाशित हुआ है और मानवता की सेवा के संदर्भ में ग्वाटेमाला के नासिर अस्पताल को भी कवरेज दी गई है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस

इस कार्यक्रम के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस शुरू हुई। इस अवसर पर निम्नलिखित इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि मौजूद थे:

चैनल 7 से तीन पत्रकार और प्रतिनिधि, प्रेंसा लिब्रे से दो पत्रकार, ग्वाटेविज़न से एक प्रतिनिधि, नुएस्ट्रो डायरियो से एक प्रतिनिधिडायरियो डे सेंट्रो अमेरिका से एक प्रतिनिधि, रेविस्टा सुम्मा का प्रतिनिधि, एक पत्रकार ने सवाल किया: "क्या आप अस्पताल जैसा प्रोजेक्ट अन्य क्षेत्रों में भी बनाएंगे?"

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आपने मेरा एड्रेस सुना होगा। अभी तो शुरुआत है, अंत नहीं हुआ है। हम आगे भी रफाह-ए-आम के और काम करेंगे। मेरे एड्रेस में आपके सवाल का पूरा जवाब आ चुका है।

इस्लामी तालीम के संबंध में एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस्लामी तालीम वह है जो कुरआन करीम ने बताई है। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने अमल से करके दिखाया है और बताया है। मैंने उसी इस्लाम का अपने एड्रेस में ज़िक्र किया था। कोई और इस्लाम नहीं है। असल इस्लाम यही है, वह नहीं जो मीडिया वाले पेश करते हैं या कुछ अतिवादी गुट दिखाते हैं। हम इस्लाम की हकीकी तालीम दुनिया में फैला रहे हैं। इसे देखकर लाखों लोग इस्लाम में शामिल होते हैं।

एक पत्रकार ने सवाल किया कि ग्वाटेमाला में हेल्थकेयर की समस्या है, इलाज की कमी है। क्या आप इसी स्तर के अस्पताल दूसरे इलाकों में भी खोलेंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इतने बड़े पैमाने पर तो नहीं हो सकता कि दूसरे इलाकों में अस्पताल खोलें। हाँ, जिस तरह हमने अफ्रीका के विभिन्न इलाकों में क्लीनिक खोले हैं और इलाज की बुनियादी सुविधाएँ मुहैया कराई हैं। बाद में धीरे-धीरे वे बड़े अस्पताल बने। इसी तर्ज पर हालात के मुताबिक और क्लीनिक शुरू किए जा सकते हैं।

23 अक्टूबर 2018 को इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस

इक्वाडोर के एक पत्रकार ने सवाल किया कि अस्पताल के लिए यह जगह क्यों चुनी गई?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमारे अपने संसाधन हैं। हमें अपने संसाधनों के दायरे में रहकर फैसला करना होता है। आमतौर पर शहरों के लोगों को सुविधाएँ मिल जाती हैं, जबकि दूसरे इलाकों के लोगों को कम सुविधाएँ मिलती हैं। हमारा मकसद सेवा करना है, पैसा कमाना नहीं। हम अपने रिसोर्सेज के अंदर रहते हुए जहाँ ज़रूरत होती है, वहाँ अस्पताल बनाते हैं।

एक पत्रकार ने कहा कि मैं पैराग्वे से हूँ। वहाँ जमाअत तरक्क़ी कर रही है। अब तक तीस लोग अहमदी बन चुके हैं। जमाअत के फैलने और उसकी तरक्क़ी के बारे में हुज़ूर अनवर का क्या ख्याल है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हम एक धार्मिक जमाअत हैं। धार्मिक जमाअतें धीरे-धीरे तरक्क़ी करती हैं। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक छोटे से इलाके में मसीह और मेहदी होने का दावा किया था। फिर आपका पैगाम बाहर निकला और सैकड़ों लोगों ने आपको क़ुबूल किया। फिर क़ुबूल करने वालों की संख्या हज़ारों में, लाखों में पहुँच गई और लगातार बढ़ रही है। आज हम दुनिया के 212 देशों में हैं और हर साल लाखों लोग जमाअत में शामिल होते हैं। इसी तरह पैराग्वे में भी हम पैगाम पहुँचा रहे हैं। जो इस पैगाम को पसंद करते हैं, वे क़ुबूल करते हैं। कुछ मुख़ालिफ़ भी हैं, लेकिन हमारा पैगाम दिलों को छू रहा है, दिलों में उतरता है और लोग क़ुबूल करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमें उम्मीद है कि पैराग्वे के लोगों को हमारा पैगाम अच्छा लगेगा और वे मान लेंगे। उनकी आने वाली नस्लें भी मान लेंगी। हम अपने पैगाम को छोड़ने वाले नहीं हैं।

अस्पताल का कायम करना और यह ख़िदमत-ए-खल्क का काम इसलिए नहीं है कि लोग इस्लाम क़ुबूल करें। यह तो सिर्फ इंसानियत की ख़िदमत के लिए है। ग्वाटेमाला के लोग हों, पैराग्वे के हों या बेलीज़ के हों, चाहे वे इस्लाम क़ुबूल करें या न करें, हम अपना तब्लीगी काम करते रहेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तीस की संख्या अभी कम है। यह बढ़ेगी। जब क़ादियान के गाँव में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया था, तो न कोई संसाधन थे, न रेल थी, न कोई और ज़रिया था। इसके बावजूद आपकी ज़िंदगी में आपको क़ुबूल करने वालों की संख्या चार लाख तक पहुँच गई। आज 212 देशों में यह संख्या करोड़ों में पहुँच गई है और लगातार बढ़ रही है। तो धार्मिक जमाअतें इसी तरह फैलती हैं। इसी तरह इं शा अल्लाह पैराग्वे में भी होगा। धीरे-धीरे संख्या बढ़ेगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ईसाइयत को दुनिया में फैलने में तीन सौ साल से ज़्यादा का वक्त लगा था। बानी-ए-जमाअत अहमदिया हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि मैं मसीह अलैहिस्सलाम के क़दमों पर आया हूँ। तीन सौ साल का अर्सा नहीं गुज़रेगा कि दुनिया में अक्सरियत जमाअत अहमदिया की होगी और उस इस्लाम को क़ुबूल करने वाली होगी जो आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हकीकी इस्लाम है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर एक शख़्स मल्टीप्लाई होकर करोड़ों में चला गया, तो इन तीस में से हर एक भी मल्टीप्लाई होकर हज़ारों, लाखों में चला जाएगा। इंशाअल्लाह।

यह प्रेस कॉन्फ्रेंस छह बजकर पच्चीस मिनट पर खत्म हुई।

ग्रुप फोटो

बाद में अमेरिका के उन डॉक्टर साहिबान ने, जो वक्ता-फौक्ता नासिर अस्पताल ग्वाटेमाला में ख़िदमात अंजाम देंगे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ग्रुप फोटो खिंचवाने की सआदत हासिल की।

इसके बाद यू.एस.ए, कनाडा और यूके के ह्यूमैनिटी फर्स्ट के डायरेक्टर्स और इस शाखा से जुड़े अन्य कार्यकर्ताओं ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का शरफ़ हासिल किया।

फिर अस्पताल के पूरे स्टाफ और कर्मचारियों ने हुज़ूर अनवर के साथ सामूहिक फोटो खिंचवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अस्पताल के अंदर तशरीफ ले आए, जहां महिला डॉक्टरों ने उनके साथ तस्वीर खिंचवाने की सआदत पाई।

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार सात बजे यहां से मस्जिद बैतुल औवल के लिए रवानगी हुई। साढ़े सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद में तशरीफ़ आवरी हुई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए मिशन के रहने वाले हिस्से में तशरीफ ले गए। बाद में वह दफ्तर में तशरीफ ले आए और सेंट्रल अमेरिका व साउथ अमेरिका के देशों से आने वाले मुबल्लिगों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फोटो खिंचवाने की सआदत पाई।

बाद में हुज़ूर अनवर ने हर मुबल्लिग से अलग-अलग पूछताछ की कि वे किस देश में सेवा कर रहे हैं, किन-किन ने स्पेनिश भाषा सीख ली है, उस समय देश में कितने अहमदी हैं और जमाअत की संख्या क्या है।

हुज़ूर अनवर ने जायज़ा लेने के बाद सभी मुबल्लिगों को निर्देश दिया कि जहां वे तैनात और रह रहे हैं, वहां सिर्फ़ तब्लीगी कोशिशें ही न हों, बल्कि वहां से दूर अन्य इलाकों में भी लोगों तक पैगाम पहुंचाना चाहिए, खासकर जहां लोगों की आबादी ज्यादा हो और इस्लाम में दिलचस्पी भी हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हर मुबल्लिग को साल में कम से कम सौ बैअतों के हासिल करने का लक्ष्य दिया।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आठ बजकर पंद्रह मिनट पर मस्जिद में तशरीफ ले आए और नमाज़-ए-मगरिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर यहां से होटल पोर्टा के लिए तशरीफ ले गए। पुलिस ने काफिले को एस्कॉर्ट किया। करीब नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ ले आए।

नासिर अस्पताल, ग्वाटेमाला के उद्घाटन पर मेहमानों के तआस्सुरात

नासिर अस्पताल, ग्वाटेमाला के उद्घाटन के मौके पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के खिताब ने मेहमानों पर बहुत गहरा असर छोड़ा है और कई मेहमानों ने अपने तआस्सुरात का इज़हार किया है।

इलियाना कैल्स (ग्वाटेमाला की संसद सदस्य) ने अपने तआस्सुरात बयान करते हुए कहा: "यह मेरे लिए बहुत बड़ा इज़्ज़त की बात है कि मुस्लिम जमाअत अहमदिया के खलीफा का एयरपोर्ट पर इस्तक़बाल करने की सआदत नसीब हुई। इसके अलावा ग्वाटेमाला के लिए यह भी क़ाबिल-ए-इज़्ज़त और बाइस-ए-सद-इफ़्तिखार है कि खलीफा अपनी बेगम साहिबा के साथ इस मुल्क को बरकत देने और नासिर अस्पताल का उद्घाटन करने तशरीफ लाए।

आपने बातचीत के दौरान मुझे बताया कि जहाज से मैंने ग्वाटेमाला का नज़ारा किया तो ग्वाटेमाला की ज़मीन को बहुत ही हरी-भरी और खूबसूरत पाया।

खलीफा के इस्तिफ़सार पर मैंने बताया कि हमारी संसद 158 सदस्यों पर मुश्तमिल है जो क़ानून साज़ी करती है और सीनेट नहीं है। मेरा ताल्लुक सरकारी पार्टी से है और मैं अपने संसदीय ग्रुप की इंचार्ज हूं। इसके अलावा संसद की तरफ से पांच कमीशन मेरे ज़िम्मे हैं जिनकी मैं निगरान हूं - अर्थव्यवस्था, रक्षा, संस्कृति, खाद्य और महिलाओं से संबंधित कमीशन। इन सब का ताल्लुक संबंधित मंत्रालय और संस्थान से है।

खलीफा ने सिर्फ़ अस्पताल के मौके पर जो पैगाम दिया, वह एक अनूठा और अमन बख़्श मोहब्बत का पैगाम है। नासिर अस्पताल का उद्घाटन ज़रूरतमंदों के लिए एक नेअमत-ए-ग़ैर-मुतवक्क़ा है। इस मुबारक तकरीब में मेरे अनुमान के मुताबिक सात सौ लोग मौजूद थे जिनका ताल्लुक दुनिया के अलग-अलग मुल्कों से था और जो बेहद तवज्जोह और दिलचस्पी से खलीफा का खिताब सुन रहे थे। ह्यूमैनिटी फर्स्ट इस अस्पताल के उद्घाटन के नतीजे में ख़िदमत-ए-इंसानियत के हवाले से अंतरराष्ट्रीय शोहरत पाएगी। हम ग्वाटेमाला के रहने वाले इस अस्पताल की तामीर से बहुत खुशी और मसर्रत महसूस करते हैं और खलीफा के शुक्रगुज़ार हैं कि आपकी रहनुमाई में नासिर अस्पताल की तामीर मुमकिन हुई।

मैं ज़ाती तौर पर भी खलीफा की बावक़ार और पुर-शफ़क़त शख़्सियत से हद दर्जे मुतअस्सिर हूं कि आपने ख़िदमत-ए-इंसानियत, बाहमी हमदर्दी और मोहब्बत का पैगाम दिया।"

मारियो फिगेरोआ (स्वास्थ्य उपमंत्री) ने अपने तआस्सुरात बयान करते हुए कहा: "मैं अस्पताल को उसके शुरुआती तामीरी काम से ही देख रहा हूं। मैं यहां पहले भी कई बार आ चुका हूं और मैंने देखा है कि यह किस तरह सामान हासिल कर रहे हैं और अस्पताल के स्टाफ के सदस्यों को कैसे तलाश कर रहे हैं। और अब यह देखने लायक बहुत खूबसूरत अस्पताल है और हमारे मुल्क के लिए यह एक तरक्क़ी की निशानी है। यह इस इलाके के आसपास के लोगों की मदद करेगा। यह एक बहुत ज़बरदस्त तकरीब है। इंसानियत के हवाले से अहमदिया मुस्लिम कम्युनिटी का आपस में मिसाली इत्तिहाद है और यह एक बहुत क़ीमती चीज़ है।"

कैलिफोर्निया की कांग्रेसवुमन नोर्मा टोरेस ने कहा: "आज का प्रोग्राम बहुत मौअस्सिर और कामयाब था और ह्यूमैनिटी फर्स्ट बहुत अच्छा काम कर रही है आज खलीफा की मौजूदगी में बैठकर खाना खाने का मौक़ा मिला है, इस चीज़ ने इस प्रोग्राम को मेरे लिए बहुत ही यादगार बना दिया है। मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत का भी इस प्रोग्राम के हवाले से शुक्रिया अदा करना चाहती हूं जो आपकी जमाअत ग्वाटेमाला में काम कर रही है। हुज़ूर बहुत अमनपसंद शख़्स हैं जो सारी दुनिया को अमन, मोहब्बत और प्यार का पैगाम पहुंचा रहे हैं। ग्वाटेमाला का नासिर अस्पताल हर मज़हब, मिल्लत और हर रंग व नस्ल के लोगों की खिदमत करेगा और यह बहुत अच्छा पैगाम है।"

सर्जियो सेलिस (ग्वाटेमाला कांग्रेस में डिप्टी प्रतिनिधि, डिस्ट्रिक्ट साकातेपेक्वेज़ के) जहां नासिर अस्पताल बनाया गया है, ने अपने तआस्सुरात बयान करते हुए कहा: "यह एक मुल्क और इस डिस्ट्रिक्ट के लिए बहुत ऐतिहासिक मौक़ा है क्योंकि यह अस्पताल सिर्फ़ और सिर्फ़ लोगों की मदद के लिए बनाया गया है जो कि ग्वाटेमाला की एक अहम मसला और ज़रूरत है। यह एक ऐसा काम है कि यहां के स्वास्थ्य मंत्री को भी ऐसा काम करने के लिए क़दम उठाने की ज़रूरत पड़ेगी। मैं जमाअत अहमदिया और ह्यूमैनिटी फर्स्ट का शुक्रगुज़ार हूं। चार साल पहले लंदन के जलसा सालाना में शिरकत की थी जहां हुज़ूर से हमारी मुलाक़ात हुई थी जिसमें हमने हुज़ूर से दरख़्वास्त की थी कि ग्वाटेमाला को तिब्बी सुविधाओं की ज़रूरत है जिस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हम ग्वाटेमाला में अस्पताल बनाएंगे और आज हम इसे अमली शक्ल में देख रहे हैं। खलीफा एक ऐसे इंसान हैं जो दुनिया में क़ियाम-ए-अमन के लिए कोशिश कर रहे हैं और हर कम्युनिटी को प्यार का पैगाम पहुंचा रहे हैं। यह ऐसी चीज़ है कि हुकूमतों और दूसरे मज़ाहिब को भी यही पैगाम फैलाना चाहिए जैसा कि खलीफा ने अपनी तकरीर में ज़िक्र किया है जिससे हर सुनने वाले के दिल में एक सुकून पैदा होता है।"

इसके बाद रॉबर्टो कैनो (पैराग्वे के शिक्षा उपमंत्री) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "यह एक बहुत अच्छा आयोजन था और मैं काफी हैरान हूँ कि यह एक ऐसा समुदाय है जिसके सदस्यों ने मिलकर इस परियोजना को पूरा किया है। इससे जरूरतमंदों की मदद की जाएगी। यही वह उत्कृष्ट तरीका है जिससे मनुष्यों से वास्तविक प्यार किया जा सकता है, जैसा कि खलीफा ने अपने भाषण में उल्लेख किया था। यदि मानवता इसी प्यार भरे रास्ते को अपनाएगी तो दुनिया में शांति स्थापित होगी। इस्लामी धर्म और संस्कृति को करीब से जानना मेरे लिए एक अच्छा अनुभव था। जमाअत अहमदिया के बारे में मेरे कई सवाल थे जिनके जवाब मुझे यहाँ आकर मिल गए। कुछ सालों से जमाअत अहमदिया पैराग्वे में भी स्थापित हो चुकी है और उन्हीं के निमंत्रण पर मैं यहाँ आया हूँ।"

जैसिंटो कास्त्रो (साकातेपेकेज़ के पूर्व गवर्नर) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि अस्पताल की नींव रखते समय मुझे भी ईंट रखने का सम्मान मिला था। मुझे यह खुशी भी है कि यह अस्पताल मानवता की सेवा के लिए बनकर तैयार हो चुका है। हुज़ूर के भाषण के संदर्भ में मैं यह कहना चाहूँगा कि इसमें शांति और सुरक्षा का संदेश है। लंदन के जलसे सालाना में एक बार मुझे खलीफा का भाषण सुनने का अवसर मिला था जो मुझे अब भी याद है - माता-पिता का सम्मान करो ताकि तुम सफल रहो। आज के दिन हुज़ूर ने जो भाषण दिया वह बहुत उम्दा है।"

चीवा वेलास्को (माया संस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय राजदूत) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "अल्लाह आप सभी को इस कार्य का बदला दे। आपके अस्पताल बनाने का भी शुक्रिया क्योंकि ऐसा अस्पताल पहले कभी इस देश में नहीं बना। लोग मुसलमानों से डरते हैं लेकिन मेरा मानना है कि मुसलमान दिल के बहुत अच्छे और मेहमाननवाज़ होते हैं।"

एक पत्रकार रिचर्ड जिन्हें आज के कार्यक्रम में शामिल होने का सौभाग्य मिला, ने कहा: "सबसे अच्छी बात यह है कि खलीफा ऐसे देश में आए हैं जो बहुत गरीब है और लैटिन अमेरिका के किसी देश में पहली बार आए हैं। उनका आना बहुत जरूरी था। यह एक ऐसा देश है जहाँ इस्लाम के बारे में लोग सुनते और सोचते हैं और जानकारी हासिल करना चाहते हैं। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी खलीफा हमारे यहाँ तशरीफ लाएँगे। खलीफा के भाषण के संदर्भ में मैं यह कहना चाहूँगा कि जमाअत अहमदिया जरूरतमंदों की मदद और शांति व प्यार फैलाने की सोच रखती है। खलीफा ने अपने भाषण में जो संदेश दिया वह बहुत अच्छा है।"

आरोल्डो मोंटेरोसो (एक बैंक प्रबंधक) ने कहा: "यह एक बहुत अच्छा कार्यक्रम था। हमें बहुत संतोष है कि हमारे देश को इससे मदद मिलेगी। यह एक बहुत प्रभावशाली भाषण था और बहुत अच्छा संदेश था जिसे हुज़ूर ने पूरी उम्मत-ए-मुस्लिमा की तरफ से दिया कि मानवता की मदद करना सबका फर्ज है। जो सबसे अच्छी बात पसंद आई वह यह कि लोगों की निस्वार्थ मदद की जाए। मेरे लिए यह बात भी बहुत दिलचस्प थी कि जमाअत अहमदिया की फिलॉसफी क्या है और जमाअत इस देश के लिए क्या कर रही है।"

ग्वाटेमाला के एक पशु चिकित्सक गिलर्मो गोंजालेज ने कहा: "यह एक बहुत अच्छा कार्यक्रम था और हम जमाअत अहमदिया के आभारी हैं कि उसने यह मिशन यहाँ शुरू किया। खलीफा का भाषण ऐसा था जो इंसान को एहसास दिलाता है कि एक इंसान को जरूरतमंदों की कैसे मदद करनी चाहिए। यह एक ऐसा काम है जिसे आपकी जमाअत बहुत समय से करती आ रही है और हमें आशा है कि आप यह काम जारी रखेंगे। सबसे अच्छी बात यह लगी कि आप लोगों ने कोई भेदभाव नहीं किया - यह अस्पताल हर जरूरतमंद के लिए बनाया गया है।"

ग्वाटेमाला के एक डॉक्टर जॉर्ज समायोआ ने कहा: "आज का आयोजन बहुत खूबसूरत और जबरदस्त था। इतने लोग बाहर से आए हैं और सबका एक ही मकसद है। आपसी प्यार और मोहब्बत को बढ़ावा देना। खलीफा साहब का भाषण सिर्फ ग्वाटेमाला के लिए नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए है। ग्वाटेमाला के इतिहास में आज का दिन सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा कि अल्लाह का खलीफा ग्वाटेमाला आया। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि मुझे इस बरकत भरे कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।"

जमाअत के एक मित्र राउल मेसेली ने कहा: "आज मेरी खलीफतुल मसीह के साथ पहली मुलाकात थी। मैं हुज़ूर से मिलकर बहुत लाभान्वित हुआ हूँ। मैंने हुज़ूर के बारे में सुना तो था लेकिन पहले कभी मिला नहीं था। हुज़ूर वाकई में एक सच्चे और रूहानी इंसान हैं। मैं इस बात की सराहना करता हूँ कि आपने अहमदिया मुस्लिम जमाअत को ग्वाटेमाला में यह अस्पताल बनाने का अवसर दिया है। हम इस स्वास्थ्य सेवा और उस प्रशिक्षण से वास्तविक रूप से लाभान्वित होंगे जो यह अस्पताल हमारे स्थानीय डॉक्टरों को प्रदान करेगा। संक्षेप में कहूँ तो खलीफा को मानवता से प्यार है और यही वजह है कि वे यहाँ तशरीफ लाए हैं। इस्लाम के कई उद्देश्यों में से यह भी एक उद्देश्य है।"

एक अखबार की वाणिज्यिक निदेशक मिस डोनिस ने कहा: "आज का कार्यक्रम बहुत प्यारा और शानदार था। मैं आपको इस पर बधाई भी देना चाहती हूँ। मेरा मानना है कि ऐसे कार्यक्रम हमारे ग्वाटेमाला में और भी होने चाहिए। खलीफा साहब का भाषण एक बहुत प्यारा और मानवता से भरपूर संदेश था। मैं बधाई देना चाहती हूँ कि आपने जनकल्याण के लिए इतना बड़ा अस्पताल स्थापित किया है। हमारे हर जिले में ऐसे कार्यक्रम होने चाहिए। यह बहुत सराहनीय होगा यदि हम ऐसे आयोजन हर क्षेत्र में करें।"

एल पेरिओडिको अखबार के पत्रकार फर्नांडो पिनेटा ने कहा: "खलीफा साहब का भाषण बहुत प्यारा, दिल को छू लेने वाला और मोहब्बत भरा था। खलीफा से मिलकर मैंने बहुत अच्छा महसूस किया। पहली बार हुज़ूर को इतने करीब से देखकर मेरे दिल को एक सुकून मिला है जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। नासिर अस्पताल का प्रोजेक्ट बहुत अच्छा है। हमें ऐसे ही और प्रोजेक्ट चाहिए जो हमारे देश ग्वाटेमाला को लाभ पहुँचाएँ।"

कोस्टा रिका से आए एक नवम्बई जायरो ने कहा: "आज का आयोजन एक अच्छा इवेंट था। मेरे विचार में ग्वाटेमाला के लोगों की जो बेचैनी थी कि उनकी चिकित्सीय मदद की जाए, उसे दूर करने में नासिर अस्पताल बहुत उपयोगी साबित होगा, इंशाअल्लाह।"

नासिर अस्पताल की प्रशासक मिस पेट्रीसिया ने कहा: "आज का कार्यक्रम बहुत अच्छा था। कई महत्वपूर्ण हस्तियाँ हुज़ूर से मिलने आई थीं। लोगों की भारी भीड़ थी जो हुज़ूर की एक झलक देखने के लिए दूर-दराज के इलाकों से यहाँ जमा हुई थी। इनमें वे लोग भी शामिल थे जिन्होंने इस प्रोजेक्ट पर भरोसा किया और नासिर अस्पताल के लिए दान भी प्रदान किए। हुज़ूर का आज का भाषण बहुत उम्दा था। मुझे जो बात सबसे ज्यादा पसंद आई वह यह थी कि मख्लूक के साथ हमदर्दी और शफकत की जाए। यही वह मुख्य बात थी जिसे खलीफा ने बयान फ़रमाया। नासिर अस्पताल के भविष्य के बारे में कहा कि यह हमारे लिए एक बड़ी चुनौती होगी क्योंकि अभी कई योजनाएँ हैं जिन्हें लागू करना है, लेकिन हम बहुत खुश हैं और भविष्य में भी मेहनत से काम करेंगे।"

कार्लोस रानहेल (एस.ए. इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधि) ने कहा: "आज का कार्यक्रम बहुत अच्छा था और बेहतरीन तरीके से आयोजित किया गया था। हम दिल की गहराई से हुज़ूर का शुक्रिया अदा करते हैं। अल्लाह करे कि हम भी नासिर अस्पताल की मदद कर सकें। हुज़ूर के भाषण के बारे में कहा कि यह बहुत अच्छा था। हुज़ूर ने फ़रमाया कि दूसरों से बिना किसी व्यक्तिगत उद्देश्य के प्यार और हमदर्दी की जाए। हम यही

संदेश लेकर जा रहे हैं। बहुत शुक्रिया, इस अस्पताल के निर्माण पर बधाई। मैं आशा करता हूँ कि ग्वाटेमाला के लोगों की तरफ से आपको भरपूर सहयोग मिलेगा।"

एक बैंक अधिकारी विक्टर ह्यूगो रिवास ने कहा: "जमाअत का मकसद बहुत अच्छा है और यह संदेश जो आपकी जमाअत यहाँ लाई है कि मख्लूक की मदद करना और अलग-अलग इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएँ मुहैया कराना, जिसकी देश को जरूरत है, बहुत ही अच्छा है। मैंने खलीफा साहब का भाषण भी सुना। इस महान भाषण का सार यही था कि मख्लूक से हमदर्दी करो। यहाँ जो नासिर अस्पताल खोला गया है, यह उसकी एक स्पष्ट और जीवंत मिसाल है।"

एक स्थानीय ग्वाटेमाला निवासी महिला लुइसा गिरोन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "अस्पताल का उद्घाटन समारोह भावनाओं से भरा हुआ था। यह एक बहुत बड़ी परियोजना की शुरुआत है जिससे हजारों लोगों को लाभ मिलेगा। खलीफा का अस्पताल के उद्घाटन पर आना एक महान बरकत है और उनकी मौजूदगी में बैठने से सुकून महसूस हुआ।"

आरोल्डो मोंटेरोसो (एक बैंक प्रबंधक) ने कहा: "यह एक बहुत अच्छा कार्यक्रम था। हमें बहुत संतोष है कि हमारे देश को नासिर अस्पताल के माध्यम से मदद मिलेगी। खलीफा का भाषण बहुत आकर्षक था और बेहद सुंदर, सरल संदेश था जिसे हुज़ूर ने पूरी उम्मत-ए-मुस्लिमा की ओर से दिया कि मानवता की मदद करना सबका फर्ज है। मुझे जो सबसे अच्छी बात लगी वह यह थी कि लोगों की निस्वार्थ मदद की जाए। मेरे लिए यह बात भी बहुत दिलचस्प थी कि मैं आज जमाअत अहमदिया के दर्शन से परिचित हुआ। यह भी जानकारी मिली कि जमाअत अहमदिया इस देश के लिए क्या काम कर रही है।"

एक ग्वाटेमाला निवासी डॉक्टर डायना कैम्पोस ने कहा: "हुज़ूर के भाषण में जो गरीबों की मदद करने का संदेश था, मैं स्वयं भी उस पर अमल करूँगी। धर्म भी यही सिखाता है कि अल्लाह का शुक्र इस तरह अदा किया जाए कि गरीबों की मदद की जाए। खलीफा का भाषण इस मामले में बहुत प्रभावशाली था कि हर जरूरतमंद की मदद की जाए। यह संदेश मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगा कि जहां सच्चा इस्लाम होगा, वहाँ प्यार होगा। यह भी बहुत पसंद आया कि अल्लाह की खातिर आप हर गरीब की मदद करेंगे। मैं धन्यवाद भी देना चाहती हूँ कि आपने इस काम के लिए ग्वाटेमाला को चुना। हम एक राष्ट्र के रूप में आशा करते हैं कि भविष्य में भी खलीफा-ए-वक्त हमारे यहाँ तशरीफ लाएँगे।"

एक स्थानीय ग्वाटेमाला निवासी बिजनेस वुमन ने कहा: "मुझे आपके खलीफा द्वारा दिया गया प्यार और शांति का संदेश बहुत अच्छा लगा और यह भी कि बिना किसी बदले की इच्छा के जरूरतमंद की मदद करना सच्चे इस्लाम की रूह है। यह सुनकर भी अच्छा लगा कि ज़रूरतमंद के माँगने से पहले ही उसकी मदद कर दो।"

जॉर्ज नावास (वाणिज्यिक उद्योगों के प्रतिनिधि) ने कहा: "यह कार्यक्रम ग्वाटेमाला के लिए बहुत उत्कृष्ट था। मैं धन्यवाद भी देना चाहूँगा कि इतनी अच्छी नीयत से आप लोगों ने यह अस्पताल बनाया है जो ग्वाटेमाला के लोगों की मदद करेगा।"

ग्वाटेमाला की एक पत्रकार एवलिन वास्केज़ ने कहा: "मुझे जिस बात ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह यह है कि धर्म में ज़बरदस्ती नहीं है, बल्कि यह भी कि एक-दूसरे का ख्याल रखना चाहिए और यही संदेश खलीफा ने हमें दिया है। साथ ही यह भी कि हम सब समान अधिकार रखते हैं। हर इंसान को एक उत्कृष्ट जीवन स्तर मिलना चाहिए जो हमारे देश में इस समय गायब है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि इस अस्पताल के उद्घाटन से बहुत से लोगों को चिकित्सा के मामले में लाभ होगा और वह गरीब वर्ग जो पैसे न होने की वजह से डॉक्टरों के पास जाने से डरता है, यह अस्पताल उन लोगों की मदद करेगा।"

24 अक्टूबर 2018, बुधवार

ग्वाटेमाला से प्रस्थान और ह्यूस्टन (अमेरिका) में वरूद-ए-मसऊद

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बजे होटल के हॉल में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फज्र अदा की। नमाज़ के बाद हुज़ूर अपने आवासीय अपार्टमेंट में तशरीफ ले गए।

आज के कार्यक्रम के अनुसार ग्वाटेमाला का दौरा पूरा करने के बाद वापस ह्यूस्टन (अमेरिका) के लिए प्रस्थान करना था।

कार्यक्रम के अनुसार सुबह दस बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर-ए-अनवर होटल से बाहर तशरीफ लाए। ग्वाटेमाला के अहबाब-ए-जमाअत पुरुष व महिलाएं और अन्य देशों मैक्सिको, बेलीज़ आदि के नवम्बई पुरुष-महिलाएं व बच्चे सुबह से ही अपने प्यारे आका को विदा कहने के लिए इकट्ठा होने लगे थे। जैसे ही हुज़ूर बाहर तशरीफ लाए, सभी ने हाथ हिलाकर हुज़ूर को अलविदा कहा। बच्चियों और लजना ने अपनी स्थानीय भाषा में प्रार्थनात्मक कविताएं पेश कीं। हुज़ूर-ए-अनवर ने सभी अहबाब के पास कुछ देर तक तशरीफ रखकर उन्हें खुश किया। इस दौरान सभी अपने आका के दीदार से फायज़ाब होते रहे और बच्चियां कविताएं पढ़ती रहीं।

इसके बाद दस बजकर सैंतालीस मिनट पर हुज़ूर-ए-अनवर ने सामूहिक दुआ कराई और यहां से एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। पुलिस ने काफिले को एस्कॉर्ट किया। ग्यारह बजकर पैंतालीस मिनट पर हुज़ूर-ए-अनवर एयरपोर्ट पर तशरीफ लाए। हुज़ूर के आने से पहले सामान की बुकिंग, बोर्डिंग पास और इमिग्रेशन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी। विशेष प्रोटोकॉल व्यवस्था के तहत हुज़ूर-ए-अनवर एक विशेष लाउंज में तशरीफ लाए।

एक बजकर पंद्रह मिनट पर हुज़ूर-ए-अनवर विमान में सवार हुए। यूनाइटेड एयरलाइंस की फ्लाइट UA 1903 एक बजकर तीस मिनट पर ग्वाटेमाला से ह्यूस्टन (अमेरिका) के लिए रवाना हुई और ह्यूस्टन के स्थानीय समय के अनुसार विमान पांच बजकर दस मिनट पर जॉर्ज बुश ह्यूस्टन एयरपोर्ट पर उतरा। ह्यूस्टन का समय ग्वाटेमाला से एक घंटा आगे है। विशेष प्रोटोकॉल व्यवस्था के तहत इमिग्रेशन प्रक्रिया पूरी हुई और इसके बाद छह बजकर दस मिनट पर यहां से जमाअती सेंटर मस्जिद बैतुस्समी के लिए रवाना हुए। ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें समय की सुविधा के अनुसार यात्रा के दौरान अदा की गईं।

एयरपोर्ट पर मुकर्रम डॉक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब (नायब अमीर यू. एस.ए) और डॉक्टर अता-उर-रउब साहिब (सेक्रेटरी अमूर-ए-खारिजा) ने हुज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया। इस अवसर पर ह्यूस्टन के मेयर के प्रतिनिधि भी हुज़ूर-ए-अनवर के स्वागत के लिए एयरपोर्ट पर मौजूद थे।

जब एयरपोर्ट से मस्जिद बैतुस्समी जाने के लिए रवाना हुए तो पुलिस की छह मोटरसाइकिलों ने काफिले को एस्कॉर्ट किया और मिशन हाउस तक का पूरा रास्ता साफ करते रहे।

छह बजकर पैंतीस मिनट पर हुज़ूर-ए-अनवर का जमाअती सेंटर बैतुस्समी में वरूद-ए-मुबारक हुआ। जहां हुज़ूर-ए-अनवर का बहुत ही भव्य और उत्साहवर्धक स्वागत किया गया। ह्यूस्टन और आसपास की स्थानीय जमाअतों के अलावा अन्य विभिन्न जमाअतों - डलास, ऑस्टिन, बोस्टन, सिल्वर स्प्रिंग, लॉरेल, लॉस एंजेलिस, बाल्टीमोर, टेनेसी, बे पॉइंट, जॉर्जिया और शिकागो से अहबाब-ए-जमाअत लंबी यात्रा करके अपने प्यारे आका के स्वागत के लिए ह्यूस्टन पहुंचे थे।

लॉस एंजेलिस, सिल्वर स्प्रिंग और लॉरेल की जमाअतों से आने वाले अहबाब और परिवार साढ़े तीन घंटे की उड़ान भरकर पहुंचे थे। बाल्टीमोर से विमान द्वारा आने वालों ने साढ़े तीन घंटे की उड़ान भरी और बे पॉइंट व बोस्टन से अपने प्यारे आका के स्वागत के लिए आने वाले अहबाब ने चार घंटे की उड़ान ली थी।

कनाडा और जर्मनी से भी कुछ अहबाब हुज़ूर-ए-अनवर के आने से पहले ही ह्यूस्टन पहुंचे थे और आज अपने आका के स्वागत के लिए मौजूद थे।

जैसे ही हुज़ूर-ए-अनवर की गाड़ी मस्जिद बैतुस्समी के बाहरी गेट से अंदर दाखिल हुई, तो इन सभी अहबाब पुरुषों और महिलाओं ने बहुत ही उत्साहपूर्ण अंदाज में नारे लगाए। बच्चियों के समूहों ने स्वागत गीत पेश किए। हर छोटा-बड़ा, पुरुष-महिला, जवान-बूढ़ा हाथ उठाकर अपने प्यारे आका का स्वागत कर रहा था और शरफ-ए-ज़ियारत से फायज़ाब हो रहा था। इन सभी के लिए बहुत ही खुशी का माहौल था। हुज़ूर-ए-अनवर 22 अक्टूबर को ह्यूस्टन से ग्वाटेमाला के लिए रवाना हुए थे और अब दो दिन बाद वापस तशरीफ लाए थे। शाम का वक्त था और अंधेरा छा रहा था, लेकिन यह पूरा परिसर, इसकी सभी इमारतें, पेड़-पौधे और बाड़ रंग-बिरंगी रोशनियों से जगमगा रहे थे।

एक तरफ यह पूरा इलाका रोशन था तो दूसरी तरफ यहां के निवासियों के दिल भी खुशी और उल्लास से रोशन थे कि हुज़ूर-ए-अनवर अब फिर से उनके पास आ गए हैं और अब कुछ दिन यहां क़याम फ़रमाएंगे। वे दिन-रात अपने प्यारे आका के क़ुर्ब से बरकतें हासिल करेंगे, अपने आका की इक़्तिदा में नमाज़ें अदा करेंगे, अपने आका की दुआओं से हिस्सा पाएंगे और इन मुबारक व बरकत भरे लम्हों से अपने ईमान को जला बख्शेंगे और दिल को सुकून पाएंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अपना हाथ उठाकर सभी को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ ले गए। इसके बाद साढ़े आठ बजे हुज़ूर-ए-अनवर ने तशरीफ लाकर नमाज़-ए-मगरिब व इशा जमा करके अदा कीं। नमाज़ों के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ ले गए।

25 अक्टूबर 2018, गुरुवार

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छह बजे मस्जिद बैतुस्समी ह्यूस्टन में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फज्र अदा की। नमाज़ के

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 24 July 2025 Issue No. 30

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

बाद हुज़ूर-ए-अनवर अपने निवास स्थान पर तशरीफ ले गए।

सुबह हुज़ूर-ए-अनवर ने दफ्तरी डाक, खतों और रिपोर्ट्स का मुताला फ़रमाया और हिदायतों से नवाजा। हुज़ूर विभिन्न दफ्तरी अमूर की अंजामदही में मसरूफ रहे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने दो बजे मस्जिद बैतुस्समी में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-ज़ुहर व अस्र जमा करके अदा कीं। नमाज़ों के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ ले गए।

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े पांच बजे हुज़ूर-ए-अनवर अपने दफ्तर में तशरीफ लाए।

एक मेहमान हैरिस काउंटी प्रीसिंक्ट 4 के कमिश्नर जैक केगल साहिब हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात के लिए आए हुए थे। कमिश्नर साहिब ने हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात की सआदत हासिल की।

कमिश्नर साहिब ने जिनाह टोपी पहनी हुई थी जो उन्होंने अपने दोस्त नासिर हफ़ीज़ मलिक साहिब (ज़ईम अंसारुल्लाह व सेक्रेटरी तबलीग ह्यूस्टन) से हासिल की थी। मौसूफ ने कहा कि यह टोपी उन पर अच्छी लग रही है इसलिए वे इसे रखना चाहेंगे। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि आप यह टोपी रख सकते हैं। नासिर अपने लिए दूसरी टोपी खरीद लेंगे।

कमिश्नर जैक केगल साहिब ने अर्ज़ किया कि मुझे इल्म हुआ है कि हुज़ूर दुनिया के विभिन्न मुल्कों का दौरा करते आ रहे हैं। आप इतना ज्यादा सफर और काम के बीच आराम कैसे करते हैं? मेरा अमला तो मेरा शेड्यूल इस तरह बनाता है कि मैं आराम कर सकूं।

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अगर मेरे लोग मेरा शेड्यूल बनाएं तो शायद यह बिल्कुल भी मुझे आराम न करने दे। लेकिन खुशकिस्मती से मैं अपना शेड्यूल खुद बनाता हूं इसलिए आराम के लिए वक्त निकाल लेता हूं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि चूंकि मैंने आपको जिनाह कैप में आते देखा था तो ख्याल किया शायद आप अहमदी हैं और यहां विज़िट करने आए हैं। इस पर कमिश्नर ने अर्ज़ किया कि इलेक्शन में सिर्फ एक हफ्ता बाकी है लेकिन चूंकि हुज़ूर यहां तशरीफ लाए हुए हैं इसलिए मैं हुज़ूर से मुलाकात का मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। आखिर में कमिश्नर साहिब ने हुज़ूर-ए-अनवर की खिदमत में दुआ की दरख्वास्त की और मुलाकात के लिए वक्त देने पर शुक्रिया अदा किया।

यह मुलाकात पांच बजकर चालीस मिनट तक जारी रही। इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार फैमिली मुलाकातें शुरू हुईं।

आज शाम के इस कार्यक्रम में 63 फैमिलीज़ और 16 अफराद ने इंफिरादी तौर पर शरफ-ए-मुलाकात पाया। कुल मिलाकर 325 अफराद ने अपने प्यारे आका से मुलाकात की सआदत हासिल की। इन सभी अहबाब और फैमिलीज़ ने हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का शरफ़ हासिल किया। हुज़ूर-ए-अनवर ने इज़राह-ए-शफक़त तालीम हासिल करने वाले तुलबा और तालिबात को कलम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट अता फरमाईं। मुलाकात करने वाली यह फैमिलीज़ ह्यूस्टन की जमाअत के अलावा अन्य विभिन्न नौ जमाअतों से आई थीं। ऑरलैंडो, अटलांटा और नॉर्थ कैरोलाइना से आने वाली फैमिलीज़ ने 960 मील से ज्यादा का सफर बारह से चौदह घंटों में तय करके पहुंची थीं।

आज सभी ऐसे लोगों की मुलाकात थी जो अपनी जिंदगी में पहली बार हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से शरफ-ए-मुलाकात पा रहे थे। एक बड़ी संख्या उन फैमिलीज़ की थी जो गुज़िश्ता सालों में विभिन्न मुल्कों से होते हुए बड़ी तकलीफ़ों और मुसीबतों को बर्दाश्त करके यहां पहुंची थीं। आज यह लोग कितने खुशनसीब थे कि अपने प्यारे आका के क़ुर्ब में कुछ साअतें गुज़ारीं, उनके ग़म और दुख का फौर हुआ और दिल तस्कीन से भर गए और कभी न खत्म होने वाली दुआओं के खज़ाने लेकर यहां से रुखसत हुए।

मुलाकात करने वाले एक दोस्त नाहिद इज़हार शेख साहिब बयान करते हैं कि मैं अपनी अहलिया और बेटे के हमराह मुलाकात का शरफ हासिल करने आया था। जब कमरे में दाखिल होकर हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर नज़र पड़ी तो आपका चेहरा खुदाई नूर से परमालूम हुआ। उनकी अहलिया कहने लगीं कि मुझे अपनी खुशकिस्मती पर रश्क आ रहा है कि हुज़ूर-ए-अनवर के क़ुर्ब की कुछ घड़ियां नसीब हुईं। पहले हम हुज़ूर को TV पर देखा करते थे आज अपने सामने देख लिया।

एक दोस्त मोहम्मद सलीम साहिब बयान करते हैं कि पहले हम हुज़ूर-ए-अनवर को TV पर ही देखा करते थे। आज हमारी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। हम दोनों मियां बीवी बहुत nervous थे कि हम कैसे बात करेंगे लेकिन जब हम हुज़ूर-ए-अनवर के दफ्तर में दाखिल हुए तो हुज़ूर-ए-अनवर ने इतने प्यार से और मुस्कुराकर बात की कि हमारी घबराहट खुद ब खुद दूर हो गई। मुझे और मेरी पत्नी को मुलाकात के दौरान बार-बार यह एहसास होता था कि अल्लाह तआला के फरिश्ते हुज़ूर-ए-अनवर के आस-पास हैं। मैं हुज़ूर-ए-अनवर को कई बार ख्वाब में देख चुका हूं लेकिन आज खुली आंखों से अपने ख्वाबों को पूरा होते देखकर ऐसा महसूस कर रहा हूं जैसे अब मैं एक नया वजूद हूं।

एक साहिब बासित महमूद साहिब ने बताया कि मैं अभी हुज़ूर से मुलाकात करके आया हूं। मुझे लग रहा है जैसे मैं ख्वाब देख रहा हूं। मौसूफ के छोटे भाई उस्मान साहिब अपनी अहलिया के साथ मुलाकात में शामिल थे। कहते हैं मुलाकात से पहले मैं बहुत ज्यादा डरा हुआ था कि हमसे बात करते हुए कोई गलती न हो जाए। जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए हुज़ूर ने हमसे प्यार से बातें कीं और हमारी सारी घबराहट दूर हो गई।

सैय्यद मकसूद अहमद महबूब साहिब बयान करते हैं कि वे अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ अटलांटा से बारह घंटे का सफर गाड़ी से तय करके पहुंचे थे। आज हमारी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। जब मुलाकात शुरू हुई तो मैं फ़ुर्क़-ए-मोहब्बत से खुद पर काबू न पा सका और बे-इख्तियार रो पड़ा, मेरी आवाज़ बंद हो गई। आज मैं अपनी खुशकिस्मती पर नाज़ां हूं। बारह घंटे के सफर की थकावट हुज़ूर-ए-अनवर के साथ कुछ लम्हात गुज़ारने से ऐसी दूर हुई कि गोया हमने कोई सफर ही नहीं किया।

मुलाकात करने वाले एक दोस्त फ़रदौस अहमद साहिब ने अपने तआस्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि आज हुज़ूर-ए-अनवर के साथ मेरी यह पहली मुलाकात थी। मैं अपनी कैफ़ियत को अल्फ़ाज़ में ढाल नहीं सकता। हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का यह मतलब नहीं कि मैं दूसरे अहमदियों से बेहतर हूं बल्कि इसका मतलब यह है कि अब मुझे पहले से बढ़कर अपने अंदर मुसब्बत तब्दीली लाने की कोशिश करनी पड़ेगी।

एक महिला कुर्रतुल ऐन साहिबा बयान करती हैं कि आज हमारी पहली मुलाकात थी। हुज़ूर से मिलकर एक अजीब खुशी महसूस कर रही हूं। हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे मुबारक पर नूर ही नूर पाया। हुज़ूर-ए-अनवर ने मेरे बच्चों के बारे में नसीहत

शेष पृष्ठ 7 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल, बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad